7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 महिला का तीन बार बनवाया फर्जी मृत्यु प्रमाणपत्र | 5 कैदी नं 425 और बैरक संख्या एक | 8 149 साल के टेस्ट इतिहास में पहली बार

UPHIN/2023/90814 | वर्षः 03, अंकः 22 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 24 नवम्बर,2025

पीएम मोदी के राम मंदिर जाने का रूट फाइनल

स्वागत के लिए बने 12 मंच, 25 नवंबर को आएंगे राम मंदिर

अयोध्या,संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 25 नवंबर को हेलीकॉप्टर से साकेत कॉलेज हेलीपैड पहुंचकर रामपथ होते हुए राम मंदिर जाएंगे। मार्ग पर 12 स्वागत मंच, पुष्पवर्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ध्वजारोहण समारोह में राम मंदिर जाने का रूट फाइनल हो गया है। पीएम मोदी 25 नवंबर को महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट से हेलीकॉप्टर से साकेत कॉलेज में बने हेलीपैड पर आएंगे। यहां से रामपथ से होते हुए जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य द्वार से श्रीराम जन्मभूमि में प्रवेश करेंगे।

भाजपा ने इसी रूट को फाइनल मानते हुए प्रधानमंत्री के भव्य स्वागत की तैयारियां शुरू कर दी हैं। अयोध्या विधायक वेद प्रकाश गुप्त ने शुक्रवार को बताया कि 25 नवंबर को साकेत महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर अयोध्या की वैदिक परंपरा के अनुसार पीएम मोदी के भव्य स्वागत

के लिए स्वस्ति वाचन होगा।

501 बटुक ब्राह्मणों की ओर से स्वस्ति वाचन, संत–महंतों के शंखनाद और घंटा–घड़ियाल की पवित्र ध्वनि के मध्य प्रधानमंत्री का स्वागत किया जाएगा। साकेत महाविद्यालय से रामजन्मभूमि के गेट नंबर 11 यानी जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य द्वार तक रामपथ के दोनों ओर खड़े अयोध्यावासी पुष्पवर्षा के माध्यम से पीएम का अभिनंदन करेंगे। स्वागत के लिए 12 मंच बनाए गए हैं, जहां से पुष्प वर्षा की जाएगी। स्वागत पथ पर सात स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा।

दूसरी तरफ डीएम निखिल टीकराम फुंडे ने बताया कि प्रधानमंत्री के आगमन के लिए साकेत महाविद्यालय में तीन हेलीपैड बनकर तैयार हो गए हैं। यहां सेफ हाउस भी बनाया गया है। हेलीपैड स्थल पर पीएम के सुरक्षा मानकों के अनुसार, अधिकारियों की देखरेख में सभी तैयारियों को पूरा कराया जा रहा है। सफाई और बैरिकेडिंग का काम हो गया है। कॉलेज परिसर में निर्माण सामग्रियों को हरे पर्दों से ढकवा दिया गया है। उदया चौराहे से राम मंदिर तक रामपथ पर दोनों तरफ बैरिकेडिंग लगाने का काम शुरू हो गया है।

परीक्षा की तिथि बदली प्रश्नपत्र के पैकेट पर नहीं हुआ बदलाव

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग से एमकॉम तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा में चूक हुई। छात्रों की मांग पर 22 नवंबर की परीक्षा 28 नवंबर को होनी थी, लेकिन प्रश्नपत्रों पर पुरानी तिथि ही छपी थी। परीक्षा विभाग ने तुरंत सभी केंद्रों को दिशा–निर्देश जारी किए। दूसरे दिन 383 विद्यार्थियों ने परीक्षा छोड़ दी।

संवाददाता, गोरखपुर। तमाम प्रयास के बाद भी दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय का परीक्षा विभाग परीक्षा व्यवस्था को त्रुटिहीन नहीं बना पा रहा। विषम सेमेस्टर परीक्षाओं के शुरू होने के साथ ही एक बार फिर चूक सामने आई है। हालांकि समय रहते इसका पता चल गया। प्रकरण एमकाम तृतीय सेमेस्टर के स्ट्रैटजिक मैनेजमेंट के पेपर से जुड़ा है। इसे लेकर परीक्षा विभाग ने सभी परीक्षा केंद्रों को दिशा–निर्देश जारी कर दिया है।

एसआईआर : अगर मोबाइल नंबर ललक नहीं...

तो आनलाइन फार्म नहीं भर सकेगा, दिक्कत आए तो आफलाइन का विकल्प उपलब्ध

लखनऊ,संवाददाता। एसआईआर फॉर्म ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से भरा जा सकता है। ऑनलाइन फॉर्म के लिए वोटर कार्ड से मोबाइल नंबर लिंक होना जरूरी है, जबकि ऑफलाइन फॉर्म बीएलओ से लेकर जमा किया जा सकता है।

एसआईआर फॉर्म ऑनलाइन भी उपलब्ध है। मतदाता चुनाव आयोग की वेबसाइट से ऑनलाइन फॉर्म भर सकते हैं। इसके लिए वोटर कार्ड से रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर का लिंक होना जरूरी है। अगर नंबर लिंक नहीं है तो ऑनलाइन फॉर्म नहीं भर पाएंगे। हालांकि, परेशान होने की जरूरत है।

ऑफलाइन फॉर्म हर किसी के लिए उपलब्ध है। जो संबंधित बीएलओ से संपर्क कर आसानी से भरकर जमा कर सकते हैं। एसआईआर फॉर्म भरवाने की प्रक्रिया चार नवंबर से चल रही है। अधिकतर लोगों तक फॉर्म पहुंच चुका है। उनमें से भी अधिकतर लोग फॉर्म भरकर बीएलओ को सबमिट कर चुके हैं। जिन लोगों ने अब तक फॉर्म नहीं भरा है, उनके पास दो विकल्प हैं। वह घर बैठे ऑनलाइन फॉर्म भर सकते हैं। इसके लिए **https%@@voters-eci-gov-in@** वेबसाइट पर जाना होगा। यहां वोटर सेवाओं के कॉलम में एसआईआर फॉर्म मिल जाएगा। आसानी से अपने मोबाइल नंबर से लॉगिन फॉर्म भर सकते हैं। प्रक्रिया पूरी करने के बाद उसकी कॉपी डाउनलोड हो जाएगी।

.तब अपनाएं आफलाइन व्यवस्था

अगर ऑनलाइन फॉर्म नहीं भर पा रहे हैं तो अपने क्षेत्र के बीएलओ से संपर्क करें। उनसे फॉर्म लेकर भरें और उन्हें ही वापस सबमिट कर दें। ऑफलाइन फॉर्म भरने के लिए सिर्फ एपिक नंबर की जरूर होगी। साथ में नाम, पता, मोबाइल नंबर भरना होगा।

यहां तीन तरह से बीएलओ का नाम व इलेक्ट्रोरल रोल मिल जाएगा। पहले विकल्प में आप एपिक नंबर से सर्च कर सकते हैं। दूसरे में वोटर कार्ड की डिटेल भरकर व तीसरे में मोबाइल नंबर से जानकारी हासिल कर सकते हैं। एसआईआर संबंधी कोई जानकारी चाहिए है तो 0522–1950 हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। यहां से भी एसआईआर फॉर्म से लेकर बीएलओ आदि के बारे में भी जानकारी मिल जाएगी।

गोरखपुर में ट्रांसफार्मर बेचा जेई-एसडीओ ने

गोरखपुर में जेई और एसडीओ द्वारा ट्रांसफार्मर बेचने का मामला सामने आया है। हैरानी की बात यह है कि इस मामले में एफआईआर चालकों पर दर्ज की गई है। बिजली विभाग में भ्रष्टाचार का यह मामला उजागर होने के बाद हड़कंप मचा हुआ है और निष्पक्ष जांच की मांग की जा रही है।

संवाददाता, गोरखपुर। भटहट उपकेंद्र से तीन एमवीए क्षमता का ट्रांसफार्मर बेचने के मामले में एफआइआर दर्ज कराने में खेल कर दिया गया। इतने बड़े मामले में दो वाहनों के चालकों और अज्ञात व्यक्तियों पर एफआइआर दर्ज कराई गई है। इस मामले में जेई अजय सिंह और एसडीओ रामइकबाल प्रसाद को निलंबित किया जा चुका है, लेकिन एफआइआर में उनका नाम भी नहीं लिखा गया है। यहां तक कि ट्रांसफार्मर बेचने की बात छुपाते हुए चोरी की बात लिखी गई है। एंटी थेफ्ट थाना के प्रभारी निरीक्षक राधेश्याम राय ने कहा कि मैं खुद मामले की विवेचना कर रहा हूं। जो भी दोषी मिलेगा उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। आठ अक्टूबर को भटहट उपकेंद्र से ट्रांसफार्मर बेचने का पर्दाफाश किया था। बिजली निगम के चेयरमैन डा. आशीष गोयल के निर्देश पर विद्युत वितरण मंडल प्रथम के अधीक्षण अभियंता डीके सिंह की समिति ने जांच की। उपकेंद्र परिसर में ही एसडीओ का भी कार्यालय है। जांच रिपोर्ट के आधार पर जेई व एसडीओ को निलंबित कर दिया गया। मुख्य अभियंता आशुतोष श्रीवास्तव ने एफआइआर दर्ज कराने के निर्देश दिए थे।

कार्यवाहक जेई ने दर्ज कराई एफआइआर

जेई अजय सिंह के निलंबित होने के बाद भटहट उपकेंद्र का कार्यवाहक जेई मिथलेश कुमार विश्वकर्मा को बनाया गया है। मिथलेश कुमार विश्वकर्मा ने तहरीर में लिखा है कि 25 अगस्त 2024 को तीन एमवीए क्षमता का पुराना ट्रांसफार्मर क्रेन संख्या यूपी 53 जीटी 4222 और ट्रक संख्या यूपी 77 एएन 0802 से ले जाया गया। क्रेन के चालक रामलखन यादव और ट्रक के चालक हरिवंश चौहान द्वारा अज्ञात व्यक्तियों के साथ मिलकर भंडार खंड में जमा करने के लिए ले जाया गया। बाद में पता चला कि जो लोग पावर ट्रांसफार्मर ले गए वह विभागीय नहीं थे। धोखाधड़ी से सभी कर्मचारियों को अंधेरे में रखते हुए ट्रांसफार्मर की चोरी कर लिए। इसकी जानकारी मुझे विभागीय जांच समिति की आख्या से मिली।

17 लाख रुपये निर्धारित की गई है कीमत

पावर ट्रांसफार्मर की कीमत विभागीय अधिकारियों ने 17 लाख रुपये निर्धारित की है। वर्तमान में इस ट्रांसफार्मर का रेट 40 लाख रुपये से ज्यादा है। रेट निर्धारण को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं।

सीएम डैशबोर्ड की रैंकिंग में खराब प्रदर्शन पर कमिश्नर ने चेताया

संवाददाता, गोरखपुर। कमिश्नर अनिल ढींगरा की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयुक्त सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक में सीएमआइएस की कार्यदक्षता, सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित आंकड़ों तथा मंडल स्तरीय निर्माण और विकास परियोजनाओं की गहन समीक्षा की गई। सीएम डैश बोर्ड की अक्टूबर माह की रैंकिंग में मंडल के सभी जिलों के खराब प्रदर्शन पर उन्होंने कड़ी नाराजगी जताई।

कमिश्नर ने स्पष्ट कहा कि समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण डाटा अपलोडिंग अनिवार्य है, क्योंकि शासन स्तर पर वास्तविक प्रगति का मूल्यांकन सीएमआइएस पर उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर ही किया जाता है। उन्होंने कई विभागों की शिथिल रिपोर्टिंग पर नाराजगी जताते हुए नोडल अधिकारियों को कड़ी चेतावनी दी कि प्रतिदिन डाटा अपडेट करने के साथ ही यह सुनिश्चित करें कि परियोजनाओं की वास्तविक स्थिति और पोर्टल पर दर्ज आंकड़ों में किसी भी प्रकार का अंतर नहीं होना चाहिए। बैठक के दौरान प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने पीओ (नेडा) को एलडीएम व विद्युत विभाग से समन्वय बढ़ाकर सोलर स्थापना के कार्य में गति लाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि मंडल के सभी जिलाधिकारी इस योजना की प्रगति की स्वयं निगरानी करें, ताकि निर्धारित लक्ष्यों को समय पर प्राप्त किया जा सके। फेमिली आइडी की धीमी प्रगति पर भी कमिश्नर ने असंतोष जताया और निर्देश दिया कि सभी जनपद लंबित कार्यों को तेजी से पूर्ण करें। उन्होंने विशेष रूप से लोक निर्माण विभाग, उद्यान, ग्राम्य विकास, ग्रामीण अभियंत्रण, एमएसएमई, दिव्यांगजन सशक्तिकरण, समाज कल्याण, पर्यटन और पंचायती राज विभाग सहित विभिन्न विभागों की योजनाओं व परियोजनाओं में प्रगति लाने के लिए ठोस कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

कमिश्नर अनिल ढींगरा ने सीएमआईएस और विकास कार्यों की समीक्षा की। सीएम डैशबोर्ड पर जिलों के खराब प्रदर्शन पर नाराजगी जताई और डाटा अपलोडिंग में सुधार के निर्देश दिए। उन्होंने सूर्य घर योजना में तेजी लाने, लंबित कार्यों को पूरा करने और शिकायतों का निवारण प्राथमिकता से करने को कहा। गोरखपुर की रैंकिंग में गिरावट आई है, जिसपर कमिश्नर ने चिंता जताई।

सम्पादकीय

निशाने पर 32 शहर

फरीदाबाद की अलफलाह यूनिवर्सिटी के 15 डॉक्टर गायब हैं, लेकिन जांच एजेंसियां देश भर में ऐसे 200 आतंकी डॉक्टरों की तलाश कर रही हैं। उन मस्जिदों और ठिकानों की भी गहरी जांच की जाएगी, जहां फरार आतंकी डॉक्टर छिपे हो सकते हैं अथवा नए किस्म के आतंकवाद में उनकी भूमिका संदिग्ध और सवालिया है। आतंकी डॉक्टरों से जुड़ी जो परतें खुल रही हैं, उनके मद्देनजर लादेन, अल जवाहीरी सरीखे 'अलकायदा' के सरगना आतंकियों की साजिशों को भी मात दी जा रही है। अलफलाह यूनिवर्सिटी की बिल्डिंग नंबर 17 के कमरा नंबर 13 में साजिशों की बैठकें होती थीं। तय किया गया था कि 32 कारें खरीदी जाएंगी, जिनके जरिए देश के 32 शहरों में 'आत्मघाती विस्फोट' किए जाएंगे। अब जांच एजेंसी एनआईए ने भी खुलासा कर दिया है कि लालकिले के पास वाला कार–विस्फोट हड़बड़ी में नहीं किया गया अथवा कोई दुर्घटना नहीं थी, बल्कि वह एक 'फिदायीन हमला' था और डॉ. उमर नबी एक आत्मघाती बॉम्बर था। अब यह भी रहस्योद्घाटन हो चुका है कि आतंकी डॉक्टरों ने 20 लाख रुपए का आतंकी फंड जुटाया था। जिन हवाला एजेंटों के जरिए यह पैसा आतंकियों तक पहुंचा, जांच एजेंसियां उनसे भी पूछताछ कर रही हैं। बहरहाल यह आतंकी फंड उमर नबी को सौंप दिया गया था। उमर ने 3 लाख रुपए का फर्टिलाइजर हरियाणा के नूंह (मेवात) से खरीदा था। यह बम बनाने में सहायक सामग्री के तौर पर इस्तेमाल किया जाता रहा है। दिल्ली विस्फोट 10/11 से पहले उमर नबी ने नूंह की 'हिदायत कॉलोनी' में एक कमरा किराए पर लिया था। वहां विस्फोटक सामग्री भी जमा की थी। नूंह और अलफलाह यूनिवर्सिटी के बीच उमर की आवाजाही सीसीटीवी में कैद होती रही। ऐसी 1300 से अधिक सीसीटीवी की फुटेज जांच एजेंसियों ने खंगाली हैं। जिस कमरे में साजिश की बैठकें होती थीं, वह एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मुजम्मिल का कमरा था, जिसे अब सील कर दिया गया है। जांच एजेंसियों को उस और असिस्टेंट प्रोफेसर रहे डॉ. उमर नबी के कमरा नंबर 4 से डायरियां, पेन ड्राइव, डिजिटल डाटा आदि बरामद हुए हैं। उनमें कई कूटनाम सामने आए हैं। उन्हें खंगालने और असलियत की तह तक पहुंचने की कोशिशें जारी हैं। आतंकी डॉक्टर आपस में 'थ्रीमा एप' के जरिए संवाद करते थे और संपर्क में रहते थे। यह 'एप' मोबाइल नंबर से लिंक नहीं होता, लिहाजा आसानी से पकड़ा भी नहीं जा सकता।

आतंकी सिर्फ कश्मीर, दिल्ली, उप्र, फरीदाबाद में ही सक्रिय नहीं थे, बल्कि उनके तार सऊदी अरब, तुर्किए, दुबई, नेपाल तक भी फैले थे। इन देशों, शहरों में आतंकी संगठन 'जैश–ए–मुहम्मद' के 'हैंडलर्स' भी मौजूद रहे हैं। वहीं से आतंकी डॉक्टरों को निर्देश मिलते रहे हैं। यह भी खुलासा हुआ है कि डॉ. शाहीन सईद उर्फ 'मैडम सर्जन' नेपाल भागने की फिराक में थी। वह उप्र के हापुड़ और उत्तराखंड में महिला जेहादियों का 'भर्तीखाना' खोलना चाहती थी। भवन की सतह पर दवाखाना हो और तहखाने में जेहाद का भर्तीखाना हो, यह शाहीन का मंसूबा था, लेकिन पुलिस और सुरक्षा बलों की गिरफ्त में फंस गई। अलफलाह यूनिवर्सिटी की पोलपट्टी भी खुल रही है। यकीनन यह 'आतंक का अड्डा' है। मौजूदा घटनाक्रम के मद्देनजर यूजीसी के आदेश पर एनएएसी (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) ने यूनिवर्सिटी को 'कारण बताओ' नोटिस जारी किया है। प्रवर्तन निदेशालय आतंकी फंडिंग और मनी ट्रेल की जांच करेगा। डॉक्टरों के वित्तीय लेन–देन की भी जांच होगी। 'एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज' ने अलफलाह की सदस्यता रद्द कर दी है। भारत सरकार के अल्पसंख्यक मंत्रालय ने भी अलफलाह को करोड़ों रुपए की मदद दी थी। उसके कारणों को भी खंगाला जाएगा। अलफलाह में एमबीबीएस करने की फीस 70 लाख रुपए पांच साल की होती थी। परिसर में ही नमाज पढ़ी जाती थी और महिलाओं को हिजाब के लिए बाध्य किया जाता था। यहां 40 फीसदी आरक्षण मुस्लिम छात्रों को दिया जाता था और 40 फीसदी सीटें कश्मीरी छात्रों के लिए आरक्षित होती थीं। अलफलाह यूनिवर्सिटी के खिलाफ यूएपीए के तहत दो अलग–अलग प्राथमिकी दर्ज की गई हैं और सभी दस्तावेज, रिकॉर्ड्स मांगे गए हैं। जांच एजेंसियां इसके फर्जीवाड़े, धोखाधड़ी आदि की व्यापक जांच करना चाहती हैं।

भौगोलिक साझेदारी

अपनी जमीन पर आत्मनिर्भरता के लिए खड़े हिमाचल ने पुनः केंद्र की आंखें और क्षेत्रीय सहयोग के रास्ते खोलने की भरपूर कोशिश की है। हरियाणा के फरीदाबाद में उत्तरी क्षेत्रीय परिषद की 32वीं बैठक में फिर हिमाचल का नक्शा खुला, तो पंजाब पुनर्गठन के अधिकारों की बात चली, इंसाफ की भाषा से तकरार चली। जिंदा रहने की सांसें उस पानी में हैं, जो हिमाचल की विरासत से निकल कर राष्ट्र के लिए तसदीक होता है। ऐसे में भाषायी आधार पर पंजाब भले ही अपने हिस्सों की इबारत में हरियाणा और हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्रों में विभक्त हो गया, मगर जीने का जलचक्र, जलवायु और भौगोलिक मिलनसारी की साझेदारी, संयुक्त पंजाब की बाहों में आज भी एक जरूरत है। इसी का जिक्र करते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू जब पंजाब पुनर्गठन में हिमाचल के 7.19 प्रतिशत हिस्सेदारी को सामने लाते हैं, तो छह दशक की नाइंसाफी सामने आ जाती है। अंततः जीने–मरने के सवाल पर किसी भी प्रदेश की आरजू यही होगी कि आर्थिक समस्याओं का न्यायपूर्ण हल मिले। यह महज पंजाब को बांटने या हिमाचल को पर्वतीय क्षेत्र सौंपने का अधिकार नहीं था, बल्कि तमाम संपत्तियों में हिमाचल को उसका नेक हक देने का फैसला भी होना चाहिए था। विडंबना यह कि हमने पिछले साठ साल ऊपरी और पंजाब से छिटक कर मिले निचले हिमाचल के बीच राजनीतिक सरहदें बनाने में ही गुजार दिए। हम बोलियों की उलझन में एक हिमाचली भाषा तक पैदा नहीं कर पाए, तो किस स्वाभिमान से पंजाब से 7.19 प्रतिशत के हिसाब से प्रदेश को सशक्त कर पाते। हमारे लिए बीबीएमबी एक विरासत रहा, लेकिन यह पैरवी नहीं हुई कि उससे मुफ्त बिजली की रॉयल्टी में पचास फीसदी अधिकार मिलते।

पौंग बांध विस्थापन के दर्द में अगर प्रदेश डूबता, तो इस परियोजना से हासिल आर्थिकी में हमारे विकास के कदम भी आगे बढ़ते। टीहरी बांध परियोजना से निकल कर न्यू टिहरी बस गया, लेकिन पौंग के किनारे हम पुनर्वास के लिए कोई शहर न बसा सके। यह इसलिए कि हमारे हुक्मरानों को आरंभ में पंजाब से आकर मिले हिस्सों को मात्र हिकारत से देखना था या सचिवालय की कुर्सियों में आराम से बैठना था। किसी ने यह नहीं सोचा कि जिस राजधानी चंडीगढ़ में कभी पंजाबी, हरियाणवी और कांगड़ी बोली से सुसज्जित गीतों की स्थापना से शहर के गार्डन गुनगुनाते थे या संग्रहालय में कांगड़ा पेंटिंग्स के चित्र मुस्कराते थे, उनको यह राज्य कैसे भूल सकता था और इसीलिए अगर 7.19 प्रतिशत की पैमाइश होती, तो आज कितने ही सेक्टर हमारी सुविधाओं के केंद्र बन जाते। क्या हमने चंडीगढ़ में हिमाचल पथ परिवहन निगम के डिपो के लिए जगह मांगी या इसी तरह क्षेत्रीय पार्टनरशिप में हाथ बढ़ाए। अंततः बात चिट्टे की हो या धार्मिक पर्यटन की, हिमाचल के साथ हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, जम्मू–कश्मीर व चंडीगढ़ तक एक साझी रणनीति की जरूरत है। अफसोस यह कि चाहकर भी आनंदपुर साहिब–नयनादेवी रोपवे परियोजना को ये दोनों राज्य शुरू नहीं कर पाए।

पी के की उलझन भरी राजनीति

बिहार विधानसभा चुनाव में करारी शिकस्त खाने के बाद इंतजार था कि अब प्रशांत किशोर राजनीति में किस दिशा में बढ़ते हैं। मंगलवार को एक प्रेस कांफ्रेंस कर पी के ने स्पष्ट कर दिया है कि वे न बिहार छोड़ने वाले हैं, न राजनीति। यह जाहिर भी था। भले ही प्रशांत किशोर ने पहले ऐलान किया हो कि अगर जनता दल (यूनाइटेड) ने चुनाव में 25 से ज़्यादा सीटों पर जीत दर्ज की तो वह राजनीति छोड़ देंगे। लेकिन अब जेडीयू ने पी.के. के दावों से तिगुने से अधिक 85 सीटें जीती हैं। तो सवाल उठने लगे कि क्या अब पी. के. राजनीति को अलविदा कह देंगे। इसका जवाब उन्होंने अपनी प्रेस कांफ्रेंस में दे दिया कि 'मैं उस बात पर बिल्कुल कायम हूं। अगर नीतीश कुमार की सरकार ने ये वोट नहीं ख़रीदे हैं, तो मैं राजनीति से संन्यास ले लूंगा।' पी.के. की पार्टी ने महिलाओं के खाते में 10 हजार देने को घूस भी बताया है। एक पत्रकार ने उनसे सवाल किया कि 'जब आपने ये बयान दिया था, तब ये शर्तें क्यों नहीं बताईं थीं?' इस पर प्रशांत किशोर ने कहा, 'मैं किस पद पर हूं कि इस्तीफ़ा दे दूं?

मैंने ये तो नहीं कहा था कि बिहार छोड़कर चले जाऊंगा। मैंने राजनीति छोड़ रखी है, राजनीति कर ही नहीं रहे हैं। लेकिन ये तो नहीं कहा है कि बिहार के लोगों की बात उठाना छोड़ देंगे।' इन बातों से जाहिर है कि प्रशांत किशोर की राजनीति भी उनकी बातों की तरह उलझाने वाली है। जिसमें कोई स्पष्टता नहीं है और कभी भी अपने कहे से पलटने की गुंजाइश है। आखिर मौजूदा दौर में इस तरह के राजनेता ही सफल भी हो रहे हैं। जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने यह भी कहा कि 'साढ़े तीन साल पहले वे व्यवस्था परिवर्तन के लिए आए थे, लेकिन सफलता नहीं मिली। न तो सत्ता परिवर्तन कर सका और न ही व्यवस्था, लेकिन बिहार की राजनीति को जरूर प्रभावित किया है।' बिहार की राजनीति को किस आधार पर प्रभावित करने की बात प्रशांत किशोर कह रहे हैं, यह अब भी स्पष्ट नहीं है। क्योंकि प्रभाव पड़ता है, तो जमीन पर दिखता है। फिलहाल तो बिहार में यथास्थिति ही कायम है। ज्यादा से ज्यादा मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के नाम बदल सकते हैं, लेकिन सत्ता पहले भी भाजपा के हाथों में थी और अब तो दोगुनी ताकत के साथ आ चुकी है। शायद प्रशांत किशोर की राजनीति, साढ़े तीन साल पहले की गई उनकी पदयात्रा, बिहार चुनाव में 238 सीटों पर अपने उम्मीदवारों को उतारने की रणनीति, चुनाव प्रचार में सत्तारुढ़ गठबंधन के साथ–साथ विपक्ष को भी निशाने पर लेना, ये सब भाजपा की दबी–छिपी मदद के ही तरीके थे। भाजपा यह अच्छे से जानती थी कि लोकसभा चुनावों के बाद इंडिया गठबंधन के उठाए मुद्दे जनता को प्रभावित करने लगे हैं। खासकर संविधान बचाने और जातिगत जनगणना, आरक्षण की सीमा बढ़ाने जैसे मुद्दे बिहार में निर्णायक भूमिका अदा कर सकते हैं। इसलिए प्रशांत किशोर को आगे बढ़ाकर इन मुद्दों के बरक्स विकास और वंशवादी राजनीति के खिलाफ नैरेटिव तैयार किया गया। याद कीजिए कि प्रशांत किशोर के भाषणों में लालू प्रसाद के साथ–साथ तेजस्वी यादव पर भी हमला होता था, खासकर उनकी शैक्षणिक योग्यता पर पी. के. हमलावर होते थे। पी.के. की तरह ही असदुदीन ओवैसी और मायावती भी महागठबंधन के लिए वोट काटने वाले साबित हुए। चुनाव में प्रशांत किशोर ने दावा किया था कि उनकी पार्टी 'या तो अर्श पर होगी या फ़र्श पर होगी।य नतीजे तो बता रहे हैं कि पार्टी फ़र्श पर आ गई है। एक भी सीट न जीतना और कई पर जमानत जब्त होना किसी सफल पार्टी के लक्षण नहीं हैं। और यह भी कोई नियम नहीं है कि चुनावी राजनीति में पहली बार ही सफलता मिल जाए। एक वक्त में भाजपा भी महज दो संसदीय सीटों वाली पार्टी थी। लेकिन उसकी विचारधारा स्पष्ट थी कि देश में हिंदुत्ववादी ताकतों को स्थापित करना है, राम मंदिर बनाना है, कश्मीर से 370 खत्म करना है आदि। प्रशांत किशोर की राजनीति में इस स्पष्टता का अभाव है। अगर वे बिहार के विकास की बात करते हैं, पलायन रोककर राज्य में ही लोगों को रोजगार मुहैया कराने और भ्रष्टाचार खत्म करने के मुद्दों के साथ चुनावी राजनीति में उतरे थे, तो यही मुद्दे महागठबंधन के भी थे। फिर उन्होंने आरजेडी या कांग्रेस का विरोध क्यों किया। इसी तरह वे आरक्षण या जाति आधारित व्यवस्था को खत्म करना चाहते हैं तो खुलकर भाजपा का साथ क्यों नहीं दिया। दो गठबंधनों में किसी एक के साथ जाने का विकल्प प्रशांत किशोर के पास था, अब भी है, लेकिन वे बिहार में अरविंद केजरीवाल की तर्ज वाली राजनीति कर रहे हैं।

शेख हसीना को फांसी की सजा

बांग्लादेश एक बार फिर 70 के शुरुआती दशक वाली उथल–पुथल के दौर के गुजर रहा है। फर्क यही है कि अब पाकिस्तान उसका करीबी है और उसे बनाने वाले भारत को वह संदेह की नजर से देख रहा है। क्योंकि इस समय पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना यहां की शरणागत हैं। अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख़ हसीना को मानवता के ख़िलाफ़ अपराध का दोषी पाते हुए मौत की सज़ा सुनाई है। दक्षिण एशियाई देशों में राजनैतिक हत्याओं और विरोधियों को मृत्युदंड के दृष्टांत पहले भी हुए हैं। गांधीजी से लेकर जनरल आंग सान, एस. डब्ल्यू.आर.डी. भंडारनायके, जुल्फीकार अली भुट्टो, शेख मुजीबुर्ररहमान, जिया उल हक, रणसिंघे प्रेमदासा, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, बेनजीर भुट्टो जैसे कई नेताओं की उनके राजनैतिक विरोधियों ने बेरहमी से हत्या की है।

इन नेताओं से पूंजीवादी, औपनिवेशिक ताकतों को चुनौती मिलती रही, या इन्होंने पश्चिमी ताकतों की कठपुतली बनने से इंकार कर दिया, जिसके जवाब में उन्हें अकाल मौत दी गई। लेकिन वह सब पिछली सदी की बातें थीं। इस नयी सदी में 2006 में सद्दाम हुसैन को फांसी पर चढ़ाया गया, तब अमेरिका की नीयत पर सवाल उठे थे कि व्यापक संहार के वे हथियार तो इराक से कभी मिले ही नहीं, जिनके शक पर समूचे इराक को बर्बाद किया गया और सद्दाम हुसैन को फांसी दी गई। लेकिन अब सदी के 25वें साल में आकर भी तीसरी दुनिया के देश ऐसी ही साजिशों का शिकार हो रहे हैं, यह देखना दुखद है। गौरतलब है कि शेख़ हसीना पर पिछले साल जुलाई–अगस्त में हुए विद्रोह के दौरान मानवता के विरुद्ध अपराध के आरोप तय किए गए थे। पिछले साल अगस्त से ही शेख हसीना भारत में निर्वासन में रह रहीं हैं। जिन हालात में उन्होंने यहां शरण ली थी, उसमें उनकी जान पर खतरा साफ नजर आ रहा था। शेख हसीना के घर पर जिस तरीके से लूटपाट हुई, उनकी निजी वस्तुओं के साथ प्रदर्शनकारियों ने अभद्रता दिखाई, उससे जाहिर हो रहा था कि बांग्लादेश में शेख़ हसीना किसी भी तरह सुरक्षित नहीं हैं। भारत में रहकर भी उन्होंने लंबे वक्त तक चुप्पी साधे रही और पिछले दिनों ही कुछेक मीडिया संस्थानों को अपने वक्तव्य दिए। इधर बांग्लादेश में शेख हसीना के धुर विरोधी मो.युनूस अंतरिम सरकार के मुखिया बने हुए हैं, लेकिन उनसे हालात संभाले नहीं गए। साफ नजर आ रहा है कि मो. युनूस बाहरी ताकतों के दबाव में रहकर काम कर रहे हैं। जिस पाकिस्तान से अपमान, उपेक्षा, भेदभाव और क्रूरता के कारण बांग्लादेश अलग हुआ, जिसके लिए लाखों लोगों ने कुर्बानी दी। शेख हसीना का लगभग पूरा परिवार बांग्लादेश बनाने की राह में कुर्बान हुआ, उनके पिता बंगबंधु शेख मुजीबुर्ररहमान ने मौत सामने देखकर भी अपना देश नहीं छोड़ा, ऐसी तमाम कुर्बानियों का अब मखौल उड़ाया जा रहा है। पाकिस्तान की सैन्य ताकतों से बांग्लादेश चलाने वाले हाथ मिला चुके हैं। पाकिस्तान में भी सैन्य प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर संविधान संशोधन करवाकर फिर सैन्य तानाशाही बनाने का रास्ता खोल रहे हैं। पाकिस्तान के लोकतंत्र समर्थक लोग इसका विरोध कर रहे हैं। लेकिन यह सब नक्कारखाने में तूती की आवाज साबित हो रहा है। इस माहौल में अगर शेख हसीना को उन की ग़ैर मौजूदगी में मामला चलाकर फांसी की सजा सुनाई जा रही है, तो यह आश्चर्यजनक तो नहीं है, लेकिन सावधान होने का संकेत अवश्य है। बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल इन पड़ोसी देशों की अस्थिरता, राजनैतिक उथल–पुथल हर तरह से भारत को प्रभावित करती है, क्योंकि हमारा न केवल इतिहास साझा है, बल्कि सीमाएं भी साझा हैं। गौरतलब है कि बांग्लादेश में जस्टिस मोहम्मद गुलाम मुर्तज़ा मजूमदार की अध्यक्षता वाले तीन सदस्यीय बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण–1 ने शेख़ हसीना समेत तीनों अभियुक्तों को दोषी पाया है। शेख़ हसीना पर लगाए गए पांच में से दो मामलों में मौत की सज़ा दी गई है जबकि दूसरे मामले में आजीवन कारावास की सज़ा हुई है। उनके साथ पूर्व गृह मंत्री असदुज्जमां ख़ान कमाल को भी मौत की सज़ा सुनाई गई है। असदुज्जमां भी अभी भारत में ही हैं। वहीं पूर्व आईजी पुलिस अब्दुल्ला अल मनून को सरकारी गवाह बन गए तो उन्हें पांच साल की सज़ा सुनाई गई है।

गोरखपुर एम्सः अयोग्य होने के बाद भी 18 महीने तक XEN का वेतनमान लेते रहा रिजू रोहित, अब होगी वसूली

गोरखपुर,संवाददाता। छह सितंबर 2023 को एम्स में कार्यकारी अभियंता के पद पर भर्ती की प्रक्रिया शुरू की गई थी। यह पद लेवल 11 का है और सातवें वेतन आयोग में ग्रेड पे 67700–208700 है। इस पद पर नियुक्ति के लिए रिजू रोहित समेत पांच लोगों ने आवेदन किया था। इसमें एक आवेदक को अयोग्य पाया गया। रिजू रोहित की 24 मई 2024 को नियुक्ति की गई।

एम्स में अयोग्य की पुष्टि होने पर हटाए गए रिजू रोहित ने 18 महीने तक एक्सईएन का वेतनमान लिया था। अब पद से हटाए जाने के बाद अतिरिक्त वेतनमान भी वसूला जाएगा। एम्स प्रबंधन ने इसकी जानकारी भी केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को दे दी है। स्वास्थ्य मंत्रालय अब रिजू रोहित श्रीवास्तव के मूल विभाग से ज्यादा दी गई सैलरी की वसूली करेगा। उम्मीद है अगले सप्ताह तक इस सम्बन्ध में पत्राचार भी कर दिया जायेगा। एम्स में मीडिया प्रभारी डॉ. आराधना सिंह ने बताया कि रिजू रोहित श्रीवास्तव एम्स से रिलीव हो चुके हैं। बाकी काम स्वास्थ्य मंत्रालय करेगा।

कार्यकारी अभियंता इलेक्ट्रिकल रिजू रोहित सीपीडब्लूडी विभाग से प्रतिनियुक्ति पर मई 2024 में एम्स में आए थे। उनकी योग्यता के खिलाफ पिछले वर्ष नवंबर में शिकायत की गई थी।

छह सितंबर 2023 को एम्स में कार्यकारी अभियंता के पद पर भर्ती की प्रक्रिया शुरू की गई थी। यह पद लेवल 11 का है और सातवें वेतन आयोग में ग्रेड पे 67700–208700 है। इस पद पर नियुक्ति के लिए रिजू रोहित समेत पांच लोगों ने आवेदन किया था।

इसमें एक आवेदक को अयोग्य पाया गया। रिजू रोहित की 24 मई 2024 को नियुक्ति की गई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा से शिकायत में कहा गया कि रिजू रोहित श्रीवास्तव की नियुक्ति के नाम पर एम्स गोरखपुर में घोटाला किया गया है। सीपीडब्लूडी में तैनाती के समय वह लेवल छह के अधिकारी थे। उनकी नियुक्ति वर्ष 2015 में 4200 ग्रेड पे पर हुई थी। एम्स में उनको सीधे लेवल 11 पर नियुक्त कर दिया गया।

नियुक्ति के पहले मूल विभाग ने अनापत्ति प्रमाण पत्र भी नहीं दिया था। एम्स के प्रशासनिक अधिकारी पुनीत चतुर्वेदी ने सीपीडब्लूडी के बंगलूरू कार्यालय के एडिशनल डायरेक्टर जनरल को पत्र लिखकर पूरी जानकारी दे दी है।

महिला का तीन बार बनवाया फर्जी मृत्यु प्रमाणपत्र

पिता–पुत्र के साथ नगर निगम कर्मियों पर केस दर्ज

गोरखपुर,संवाददाता। आरोप है कि इसके बावजूद विपक्षियों ने तीसरी बार 11 अगस्त को उनकी मां के नाम से नया फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करवा लिया। उनका आरोप है कि इस बार नगर निगम के सुपरवाइजर सहित संबंधित अधिकारियों की मिलीभगत से यह प्रमाण पत्र जारी हुआ है। एम्स थाना क्षेत्र में महिला की मौत के बाद तीन बार फर्जी मृत्यु प्रमाणपत्र बनवाकर जमीन पर अवैध दावा करने का मामला सामने आया है। मूल निवासी देवरिया के रुद्रपुर सोनबह मुस्तकिल निवासी ओमप्रकाश यादव ने अपने पटीदार योगेंद्र प्रताप यादव व उसके पिता गया प्रसाद यादव पर नगर निगम कर्मियों की मिलीभगत से उनकी दिवंगत मां पुरनी देवी का तीसरी बार फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने का आरोप लगाया है। कैंट पुलिस ने एसएसपी के निर्देश पर पिता–पुत्र और आरोपी नगर निगम कर्मचारी और अधिकारी के खिलाफ फर्जी दस्तावेज के सहारे धोखाधड़ी, षड़यंत्र समेत अन्य गंभीर धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एम्स थाना क्षेत्र के झरना टोला टीचर कॉलोनी निवासी ओमप्रकाश यादव के अनुसार, उनकी मां की मौत 31 अक्तूबर 2016 को हुई थी। इसका वैध प्रमाण पत्र विकास खंड रुद्रपुर से जारी हुआ था। इसके बाद आरोपियों ने उनके मां के नाम से जमीन पर अपना हक जताने के लिए पहला फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र 12 अप्रैल 2019 को जारी कराया था, जिसे शिकायत के बाद नगर निगम गोरखपुर ने 14 दिसंबर 2020 को निरस्त कर दिया। बाद में विपक्षियों ने वर्ष 2020 में दोबारा दूसरा फर्जी प्रमाण पत्र नए पंजीयन नंबर से निकलवाया, जिसे 13 अप्रैल 2023 को रद्द कर दिया गया था। आरोप है कि इसके बावजूद विपक्षियों ने तीसरी बार 11 अगस्त को उनकी मां के नाम से नया फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करवा लिया। उनका आरोप है कि इस बार नगर निगम के सुपरवाइजर सहित संबंधित अधिकारियों की मिलीभगत से यह प्रमाण पत्र जारी हुआ है। पीड़ित ने बताया कि जालसाजी के संबंध में उन्होंने पहले ही आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी समेत अन्य गंभीर धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसका आरोपपत्र भी न्यायालय में प्रेषित है। इसके बावजूद लगातार जारी जालसाजी से वह और उनका परिवार परेशान है। मामला संज्ञान में आने के बाद पीड़ित ने एसएसपी राजकरन नय्यर से गुहार लगाई थी।

पीड़ित की तहरीर पर पिता–पुत्र और प्रमाणपत्र जारी करने वाले आरोपी नगर निगम कर्मचारी और अधिकारी के खिलाफ फर्जी दस्तावेज के सहारे धोखाधड़ी, षड़यंत्र समेत अन्य गंभीर धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई है। जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगीः अभिनव त्यागी, एसपी सिटी

दो करोड़ में मकान दिलाने के नाम पर लखनऊ के व्यापारी से ठगी

गोरखपुर,संवाददाता। कैंट पुलिस ने जांच के बाद बुधवार को पीड़ित की तहरीर पर नई दिल्ली के बसंतकुंज निवासी संतोष शर्मा, उसके बेटे भरत भारद्वाज समेत चार अज्ञात के खिलाफ गंभीर धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। लखनऊ के गोमतीनगर पटेलपुरम निवासी व्यापारी हिरण्यगर्भ द्विवेदी से दो करोड़ रुपये की ठगी हो गई। आरोपियों ने मकान दिलाने का झांसा देकर ठगी की और गोरखपुर में रेलवे स्टेशन पर बुलाकर व्यापारी को बंदूक के बल पर धमकाया। कैंट पुलिस ने जांच के बाद बुधवार को पीड़ित की तहरीर पर नई दिल्ली के बसंतकुंज निवासी संतोष शर्मा, उसके बेटे भरत भारद्वाज समेत चार अज्ञात के खिलाफ गंभीर धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मूलरूप से कुशीनगर के पटहेरवा अमवा श्रीदुबे निवासी हिरण्यगर्भ द्विवेदी लखनऊ के पटेलपुरम में रहते हैं। हिरण्यगर्भ द्विवेदी ने बताया कि वह हाइसेन मार्केटिंग लिमिटेड के निदेशक हैं, जिसकी शाखाएं लखनऊ, नोएडा और गोरखपुर में संचालित होती हैं। वर्ष 2020 में कंपनी विस्तार के लिए नया कार्यालय खरीदने की योजना के दौरान उनकी मुलाकात दिल्ली के बसंतकुंज निवासी भरत भारद्वाज से हुई थी। भरत ने गोमतीनगर स्थित वी–6/42, विनीत खंड का दो मंजिला मकान दिखाकर दो करोड़ में बेचने का प्रस्ताव दिया। उसने अपने पिता संतोष शर्मा के नाम एनसीएटी से खरीदे गए मकान के दस्तावेज भी दिखाए। भरोसा होने पर द्विवेदी ने एक करोड़, 38 लाख, 11 हजार रुपये आरटीजीएस से, 5 लाख नकद, 20 लाख रुपये नोएडा स्थित दीवान एंड संस कंपनी के माध्यम से तथा शेष 36.89 लाख रुपये अलग–अलग तिथियों में देकर कुल दो करोड़ रुपये दे दिए। लंबा समय बीतने के बाद भी बैनामा नहीं होने पर जब उन्होंने जांच कराई तो पता चला कि जिस मकान को बेचने की बात कही गई थी, वह वास्तव में किसी और व्यक्ति के नाम दर्ज है। इसका पर्दाफाश होने पर 17 सितंबर को आरोपियों ने उन्हें गोरखपुर कैंट क्षेत्र में रेलवे स्टेशन के पास मधु टूरिज्म ऑफिस में बुलाया।

मां का आंचल भी न दे सका सुकून... हालात से घबराए राहुल ने दे दी जान

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर में सराफा व्यापारी ने आत्महत्या कर ली। आत्मघाती कदम उठाने से कुछ घंटे पहले व्यापारी अपनी मां के पास गया था, उनका हाल पूछा था। वहीं, व्यापारी के कक्षा छह में पढ़ने वाले बेटे ने कई खुलासे किए हैं। सोने–चांदी के काम में मंदी, बढ़ता कर्ज और पारिवारिक तनाव। इन सबके बीच घिरकर गोरखपुर के पीपीगंज के वार्ड नंबर दो निवासी राहुल वर्मा (40) ने आत्महत्या कर ली। आत्मघाती कदम उठाने से कुछ घंटे पहले वह अपनी मां के पास गया था, उनका हाल पूछा था।

मां को क्या पता था कि बेटे से यह आखिरी मुलाकात है। राहुल ने कहा था कोई बात नहीं मां, परेशान मत होना सब ठीक हो जाएगा। अगली सुबह वह दुनिया छोड़ चुका था, घटना से पूरा मोहल्ला सन्न है और परिवार बदहवास।

परिजनों का कहना है कि राहुल कई महीने से आर्थिक तनाव में था और सोशल मीडिया पर भी अपनी बेचैनी जाहिर करता था। बड़े भाई राजू वर्मा ने बताया कि राहुल और उनके पिता गांव–गांव जाकर सोने–चांदी के जेवर खरीदने–बेचने का काम करते थे। समय के साथ सोने–चांदी के बढ़ते दाम के चलते व्यवसाय भी लगभग ठप हो गया था। धीरे–धीरे आर्थिक स्थिति बिगड़ती गई। कर्ज भी बढ़ गया था। डर लगता था कि राहुल कहीं गलत कदम न उठा ले।

हमने जमीन बेचकर करीब पांच लाख रुपये कर्ज चुकाया भी, फिर भी वह टूटता गया। इधर, घरेलू तकरार की बातें भी अक्सर सामने आतीं थीं। वह डिप्रेशन में रहने लगा था। वह अक्सर सोशल मीडिया पर दिल की बातें शेयर करता था। इसमें वह सुसाइड का जिक्र भी करता था। इसके चलते पूरा परिवार परेशान रहता था। सोमवार शाम को भी वह घर आया था। मां से बातचीत कर लौट गया था।

पत्नी माया और पड़ोसियों के बयान दर्ज किए

अगले दिन उसके सुसाइड की सूचना आई। बुधवार को पुलिस सराफा व्यवसायी के घर पहुंची जहां पत्नी माया और पड़ोसियों के बयान दर्ज किए। पीपीगंज थाना प्रभारी अरुण सिंह ने बताया कि परिजनों और आसपास के लोगों के बयान दर्ज किए गए हैं। जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पत्नी का आरोप, शराब पीकर करते थे झगड़ा

राहुल की पत्नी माया परतावल में संविदा शिक्षक है। माया ने बताया कि राहुल रात दो बजे तक उसके पास था। सुबह दूसरे कमरे में फंदे से लटका राहुल का शव मिला।

वह शराब पीकर झगड़ा करता था और मुझसे नौकरी छोड़ने के लिए कहता था। पत्नी के मुताबिक राहुल जून से उसे स्कूल नहीं पहुंचा रहा था जिससे वह महीनों से ड्यूटी नहीं जा सकीं।

पापा अक्सर मिलने आते थे स्कूल

राहुल के 6वीं में पढ़ने वाले बेटे हर्ष ने कहा कि पापा मुझे बहुत प्यार करते थे। हर हफ्ते स्कूल में मिलने आते थे। कभी–कभी मम्मी–पापा में झगड़ा होता था।

परिवार एक नियामक संस्था है जिसका मूलभूत आधार 'अंतरनिर्भरता' है। टेक्नोलॉजी से संबंधों में उपस्थित भावनात्मकता उपेक्षित हुई है। व्यक्तित्व–निर्माण, पारिवारिक मूल्यों और प्रतिमानों की जगह प्रौद्योगिकी निर्देशित ताकतों से हो रहा है। इसके साथ ही उपभोक्तावादी संस्कृति, पारंपरिक मूल्यों के क्षरण तथा बढ़ती हुई व्यक्तिवादिता ने पारिवारिक बंधनों को कमजोर किया है। परिणामस्वरूप लोगों में हताशा एवं अवसाद में वृद्धि हुई है और इस तरह की घटनाएं सामने आ रही हैं। –डॉ. दीपेंद्र मोहन सिंह, समाजशास्त्र, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

राहुल के व्यवहार में क्लासिक चेतावनी संकेत दिखाई दे रहे थे। वह मदद मांग रहा था, उसके संकेतों को गंभीरता से लेना चाहिए था। सोशल मीडिया पर आत्महत्या का जिक्र करना। अचानक घरवालों से मिलकर भावुक बातें करना। ये सभी संकेत स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वह मानसिक रूप से संकट में था। अगर ऐसे संकेत दिखें तो तुरंत मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ की मदद लेनी चाहिए। समय पर काउंसलिंग, दवाओं और परिवार के सहयोग से ऐसी जानें बचाई जा सकती थीं।

– आकृति पांडेय, मनोचिकित्सक, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

शादी के सात दिन बाद दूल्हे का मर्डर

दुल्हन ने प्रेमी संग इसलिए मारा, सुहागरात के बाद होने लगा था ये काम

गोरखपुर,संवाददाता। बस्ती के बेदीपुर गांव के 28 वर्षीय अनीस की हत्या में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। दुल्हन ने प्रेमी से पति की हत्या कराई थी। दुल्हन दूसरे समुदाय के प्रेमी रिंकू कनौजिया से शादी करना चाहती थी। लेकिन परिजनों ने उसकी शादी कहीं दूसरी जगह करा दी थी। उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले से बेहद ही सनसनीखेज खबर सामने आई है। यहां शादी के सातवें दिन बाद ही दूल्हे का मर्डर करा दिया गया। कत्ल किसी और ने नहीं बल्कि उसकी नई नवेली दुल्हन ने ही अपने प्रेमी के साथ मिलकर की। हत्या की जांच जब पुलिस ने की चौंकाने वाला खुलासा हुआ।

दरअसल, नवविवाहिता रुखसाना ने शादी के सातवें दिन बृहस्पतिवार की रात परशुरामपुर के वेदीपुर गांव निवासी पति अनीस (27) की हत्या करा दी। वह अपने ननिहाल के गांव में रहने वाले दूसरे समुदाय के प्रेमी रिंकू कनौजिया से शादी करना चाहती थी।

मंसूबे में नाकाम होने पर प्रेमी के साथ मिलकर उसने खतरनाक साजिश रच डाली। हत्या के दो घंटे बाद ही पुलिस ने गोंडा के खोड़ारे थाना इलाके के बैयनमवा गांव की रहने वाली रुखसाना और उसके प्रेमी गौर थाना इलाके के महुआ डाबर निवासी रिंकू कनौजिया को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही हत्या के समय बाइक चला रहे किशोर को भी अभिरक्षा में ले लिया। हत्याकांड का खुलासा करते हुए शुक्रवार को बस्ती के एसपी अभिनंदन ने बताया कि रुखसाना बुधवार को ही पति के घर से ननिहाल महुआडाबर चली गई थी। वहां रिंकू के साथ साजिश रचने के बाद अगले दिन ही पति की हत्या करा दी। दरअसल, पुलिस ने घटना के बाद जैसे ही छानबीन शुरू की तो पहली नजर में ही रुखसाना संदिग्ध प्रतीत हुई। आरोपी रिंकू और रुखसाना के बीच मोबाइल पर हुई बातचीत के कॉल रिकॉर्ड से पूरी साजिश का खुलासा हो गया।

एसपी के मुताबिक, जांच में पता चला कि रुखसाना का ननिहाल बस्ती जिले के गौर थाना क्षेत्र के महुआडाबर गांव में है। महुआडाबर गांव के रिंकू कनौजिया से रुखसाना का प्रेम प्रसंग चल रहा था। दोनों शादी करना चाहते थे, लेकिन रुखसाना के परिजनों ने उसकी शादी अनीस से करा दी।

शादी की रस्में पूरी होने के बाद से ही पति–पत्नी में विवाद होने लगा। एसपी ने बताया कि शादी के बाद रुखसाना और रिंकू ने अनीस को रास्ते से हटाकर साथ रहने की साजिश रची थी। रुखसाना और रिंकू को उनके घर से गिरफ्तार कर लिया गया। बाल अपचारी को संरक्षण गृह भेजा गया है। हत्या में प्रयुक्त तमंचा, कारतूस का खोखा और बाइक बरामद कर ली गई है।

रास्ता पूछने के लिए बुलाकर युवक की गोली मारकर हत्या

बस्ती जिले के परशुरामपुर थाना इलाके के बेदीपुर गांव के 28 वर्षीय अनीस की बृहस्पतिवार की देर शाम गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। बताया जा रहा है कि गांव के बाजार से लौट रहे अनीस को बाइक सवार दो युवकों ने रास्ता पूछने के बहाने रोका और सिर में गोली मार दी। उसे अयोध्या मेडिकल कॉलेज ले जाया गया जहां इलाज के दौरान कुछ ही देर में मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, परशुरामपुर थानाक्षेत्र के बेदीपुर गांव निवासी समसुदीन के बेटे अनीस की शादी बीते 13 नवंबर को गोंडा जिले के खोड़ारे थानाक्षेत्र के डफल डिहवा गांव में हुई थी। वारदात को हफ्तेभर पहले हुए इस रिश्ते से जोड़कर भी जांच शुरू की गई।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, बृहस्पतिवार की शाम अनीस किसी काम से गांव के पास की बाजार में गया हुआ था। शाम करीब आठ बजे वह बाजार से पैदल घर लौट रहा रहा था। अनीस घर से करीब डेढ़ सौ मीटर पहले तक पहुंचा था कि इसी बच एक बाइक पर सवार दो युवक पहुंचे रास्ता पूछने के बहाने उसे रोका और सिर में गोली मार दी। गोली चलने की आवाज सुनकर आसपास लोग दौड़े लेकिन तब तक बाइक सवार असलहा लहराते हुए भाग निकले। जानकारी के बाद परिवार के लोग भी भागकर वारदात स्थल पर पहुंचे। इस बीच किसी ने 112 नंबर पर पुलिस को सूचना दे दी। गंभीर रूप से घायल अनीस को अयोध्या के दर्शन नगर मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। मेडिकल कॉलेज में इलाज शुरू होने के कुछ देर बार ही अनीस ने दम तोड़ दिया था।

महिला की क्रूरता के साथ गला रेतकर हत्या

चेहरे-गले और पेट में गहरे जख्म... शव के पास पड़ी मिली ये वस्तुएं

बस्ती,संवाददाता। पुलिस अधिकारियों के अनुसार हत्याकांड में किसी परिचित या किसी अन्य संदिग्ध की भूमिका की जांच की जा रही है। एएसपी श्याम कांत ने कहा कि मामले की हर एंगल से जांच की जा रही है। सिद्धार्थनगर जिले के बांसी कोतवाली क्षेत्र से तीन साल बेटे के साथ घर से निकली 30 वर्षीय महिला की गला रेतकर हत्या कर दी गई। बृहस्पतिवार सुबह करीब 11 बजे रुधौली नगर पंचायत के कामता प्रसाद नगर वार्ड स्थित लक्ष्मी देवी कन्या इंटर कॉलेज के बगल स्थित बगीचे में उसका क्षत–विक्षत शव मिला। चेहरे, गले और पेट में गहरे घाव देखकर अंदेशा है कि हमलावरों ने क्रूरता के साथ इस वारदात को अंजाम दिया है।शव के पास से मिले आधार कार्ड के आधार पर महिला की पहचान प्रीति (30) पत्नी बाबूलाल, निवासी इंदिरानगर वार्ड, गंगोली, बांसी कोतवाली, सिद्धार्थनगर के रूप में हुई। घटनास्थल पर शराब व पानी की बोतलें, नमकीन के पैकेट मिलने से पुलिस हत्या से पहले किसी प्रकार की गतिविधि या साजिश की आशंका की भी जांच रही है। साथ ही मृतका का मासूम बेटा दिलखुश वहीं पास में लावारिस अवस्था में मिला, जिसे पुलिस ने परिजनों को सौंप दिया है। मृतका के पति बाबूलाल मिठाई बनाने के कारीगर है। उनके तीन बच्चे दीपिका (7), किशन (5) और दिलखुश (3) हैं। बाबूलाल ने बताया कि वह बुधवार को काम पर गया था। उसी दिन दोपहर बाद करीब तीन बजे प्रीति बिना कुछ बताए छोटे बेटे को लेकर घर से निकल गई। शाम तक न लौटने पर परिवार के लोग चिंतित हुए। रात आठ बजे बाबूलाल को उसकी मां ज्ञानमती ने फोन कर बताया कि बहू और बच्चा अब तक घर नहीं लौटे। परिवार ने रातभर और सुबह खोजबीन की, लेकिन प्रीति का कोई पता नहीं चला। इसकी सूचना पुलिस को नहीं दी गई थी। इसी बीच बृहस्पतिवार की सुबह करीब 11 बजे बगीचे में महिला का शव मिलने की सूचना पर पुलिस पहुंची और पहचान की प्रक्रिया के बाद परिजनों को बुलाया। पुलिस अधिकारियों के अनुसार हत्याकांड में किसी परिचित या किसी अन्य संदिग्ध की भूमिका की जांच की जा रही है। एएसपी श्याम कांत ने कहा कि मामले की हर एंगल से जांच की जा रही है और जल्द ही हत्या की गुत्थी सुलझा ली जाएगी। बताया जा रहा है कि महिला का मायका शोहरतगढ़ के गडाकुल मोहल्ले में है।

रात में लावारिश मिला था बेटा

प्रीति के साथ घर से निकला दिलखुश बुधवार को ही रात नौ बजे घटना स्थल से करीब सौ मीटर दूर लावारिस हालत में एक राहगीर को मिला था। पूछने पर वह अपने बारे में कुछ नहीं बता पा रहा था। काफी प्रयास के बावजूद पुलिस उसकी पहचान नहीं कर पाई। पहले तो पुलिस बालक को थाने में रखना भी नहीं चाहती थी, बाद में काफी दबाव पर रखने को तैयार हुई। बृहस्पतिवार को बाग में महिला का शव मिलने के बाद परिवार के लोग पहुंचे तो बाबूलाल ने उसकी अपने बेटे के रूप में पहचान की। बच्चा पूरी तरह से स्वस्थ है, लेकिन एहतियातन उसको सीएचसी में भर्ती कराया गया है।

लालू परिवार से भी बड़ा है यूपी का ये सियासी कुनबा राज्य को दिए दो मुख्यमंत्री, राजनीति में वंश के 25 लोग

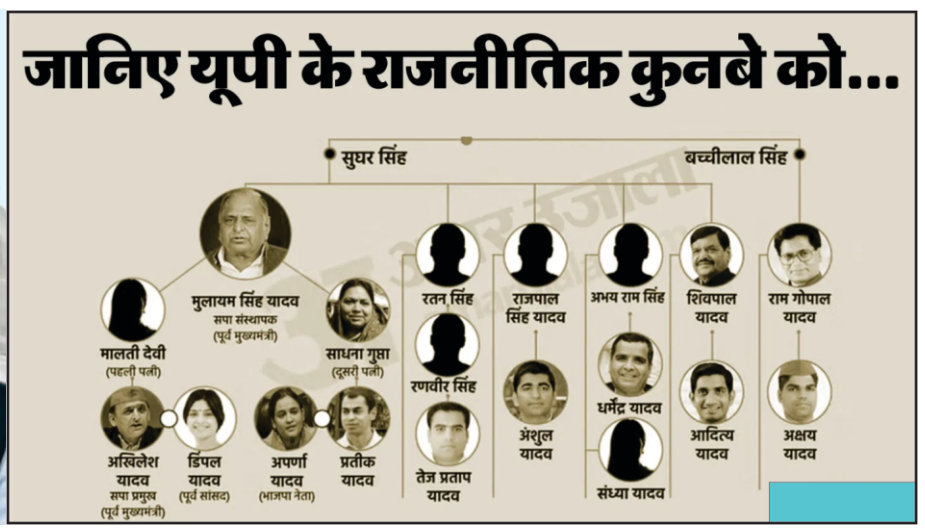

लखनऊ,संवाददाता। बिहार में चुनाव परिणामों के बीच लालू यादव परिवार में रोहिणी आचार्य और तेजस्वी यादव के विवाद ने हलचल बढ़ाई। इसी तरह यूपी के यादव परिवार में भी पहले विरासत को लेकर संघर्ष हुआ था। हालांकि अब सब ठीक ठाक चल रहा है। बिहार इन दिनों दो वजहों से चर्चाओं में है। पहली वजह चुनाव परिणाम और दूसरी वजह लालू परिवार का आपसी झगड़ा। बिहार चुनाव परिणाम आने के बाद लालू की बेटी रोहिणी आचार्य ने राजद प्रमुख तेजस्वी यादव पर आरोप लगाया कि पार्टी में सवाल उठाने पर चप्पल से पीटने की बात होती है। लालू यादव परिवार में दूसरे नंबर की बेटी रोहिणी आचार्य ने पहले कहा कि उन्होंने परिवार छोड़ दिया। पार्टी छोड़ दी। फिर पटना से निकलते समय कहा कि मुझे परिवार से निकाल दिया। तेजस्वी यादव के दो करीबियों का नाम लेकर कहा कि उनके बारे में बोलने पर चप्पल उठाई जाती है। यूपी में भी लालू यादव के जैसा ही एक राजनीति परिवार है। दोनों में समानता यह है कि इन्होंने जनता दल से निकलकर अपने–अपने राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियां बना लीं। दोनों सजातीय हैं और दोनों एक दूसरे के रिश्तेदार भी। लालू यादव की तरह मुलायम सिंह यादव के परिवार में भी विरासत का झगड़ा कभी बहुत व्यापक स्वरूप में पहुंचा। इतना बड़ा कि मुलायम सिंह यादव ने अपने पुत्र अखिलेश यादव को पार्टी से निकाल दिया। बाद में अखिलेश के चाचा शिवपाल ने अलग पार्टी बनाई। अपेक्षित परिणाम न मिलने पर उन्होंने फिर सपा में वापसी की और 2024 के लोकसभा चुनाव में मिलकर भाजपा से मुकाबला किया।

बारकोड डलते ही खुली सच्चाई

एक मतदाता के 36, दूसरे के 33 वोट! एसआईआर में फर्जी वोटर नेटवर्क का पर्दाफाश

मेरठ,संवाददाता। एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) के दौरान बड़ा फर्जीवाड़ा सामने आया है। एक मतदाता के 36 और दूसरे के 33 वोट अलग–अलग जिलों में दर्ज पाए गए। बीएलओ ने मामला अधिकारियों को भेजा, वहीं दूसरी ओर सर्वे कर रही महिला बीएलओ पर गांव में हमला भी हुआ। मेरठ में एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) में फर्जी वोटर का पर्दाफाश होने लगा है। एक मतदाता के 36 और दूसरे के 33 वोट विभिन्न जिलों में पाए गए हैं। जागृति विहार में राकेश कुमार त्यागी नामक मतदाता के चार अलग–अलग जिलों में 36 वोट मिले हैं और उनके पड़ोसी गोपाल के 33 वोट कई जिले में पाए गए हैं। इस चौंकाने वाले खुलासे ने बीएलओ (बूथ लेवल ऑफिसर) को हैरान कर दिया है और प्रशासनिक अधिकारियों को सूचित कर दिया है।

जागृति विहार सेक्टर–8 स्थित प्राइमरी स्कूल में एसआईआर अभियान में गणना प्रपत्र जमा करने की प्रक्रिया बीएलओ द्वारा कराई जा रही थी। राकेश कुमार और गोपाल ने फॉर्म देकर उसे ऑनलाइन ब्योरा दर्ज कराने के लिए कहा। बीएलओ ने दोनों फॉर्म के बारकोड को सर्च किया तो उनकी दूसरे जनपदों में वोट मिली। राकेश त्यागी ने बताया है कि उनकी वोट मेरठ और प्रतापगढ़ सहित 36 अलग–अलग स्थानों पर दर्ज है। उम्र अलग–अलग दर्ज थी। गोपाल के 33 वोट मेरठ, अलीगढ़, मथुरा जैसे कई जनपदों में पाए गए। बताया जा रहा है कि यह दो ही मतदाता नहीं हैं अन्य बहुत सारे मतदाताओं के दूसरे जिले में फर्जी वोट बने हुए हैं। एक–एक मतदाता के कई वोट अलग–अलग जनपदों में होने की जानकारी लगने पर लोगों की भीड़ लग गई और अपने अपने फॉर्म पर बने बारकोड को सर्च करने लगे।

दरोगाओं को पीटा

सुल्तानपुर,संवाददाता। वारंटी को पकड़ने गई पुलिस टीम पर वारंटी और घरवालों ने हमला कर दिया। उन्हें ना सिर्फ जमकर पीटा बल्कि एसआई की सर्विस रिवाल्वर छीनकर फरार हो गए। चार थानों की पुलिस उनकी तलाश में जुटी है। यूपी के सुल्तानपुर में बृहस्पतिवार को वारंटी को पकड़ने गए एसआई और उसके साथी पर आरोपी और उसके घरवालों ने हमला कर दिया। दोनों लोगों को जमकर पीटा। इससे वह घायल हो गए। इसके बाद एसआई की सर्विस रिवाल्वर छीनकर आरोपी भाग निकले। पुलिस टीमें उनकी तलाश में जुटी हैं। घटना हलियापुर थाना क्षेत्र के लाला का पुरवा डोभियारा गांव की है। यहां सुबह अयोध्या के कुमारगंज थाने के उप निरीक्षक अकील और भानु प्रताप जानलेवा हमले के प्रयास से जुड़े मामले में वारंटी दशरथ सिंह को पकड़ने पहुंचे थे। दोनों लोग सिविल ड्रेस में थे। इस बीच आरोपी और उसके परिवारवालों ने उप निरीक्षक अकील व भानु प्रताप पर हमला बोल दिया। आरोपियों ने दोनों उप निरीक्षकों को जमकर पीटा। इससे वह घायल हो गए। यही नहीं एसआई अकील की सर्विस रिवाल्वर छीनकर भाग निकले। सूचना पर चार थानों की पुलिस टीम पहुंची।

कैदी नं 425 और बैरक संख्या एक

यूनिफार्म भी दी गई, जेल में कई कैदियों संग रह रहे आजम खां और अब्दुल्ला

रामपुर,संवाददाता। दो पैन कार्ड मामले में रामपुर जेल में बंद सपा नेता आजम खां और उनके बेटे अब्दुल्ला आजम को रामपुर जेल में ही जेल मैनुअल के हिसाब से सुविधाएं दी जाएंगी। यदि उन्हें दूसरी जेल में स्थानांतरित करना पड़े तो उससे पहले जेल प्रशासन को कोर्ट की अनुमति लेनी होगी। कोर्ट ने आजम की बेटे के साथ रहने की बात को भी मान लिया है। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खां और उनके बेटे अब्दुल्ला आजम रामपुर जेल में ही रहेंगे। उन्हें कैदी नंबर 425 और 426 के रूप में जाना जाएगा। जेल मैनुअल के अनुसार कैदियों की दी जाने वाली यूनिफॉर्म भी पिता–पुत्र को दी गई है। हालांकि जेल प्रशासन का कहना है कि यह नंबर कैदियों के रजिस्टर संख्या के अनुसार हैं।

सपा नेता आजम खां 10 बार शहर के विधायक, चार बार प्रदेश की सरकार में कैबिनेट मंत्री और एक–एक बार लोकसभा व राज्यसभा के सदस्य भी रह चुके हैं। यूपी के मिनी उपमुख्यमंत्री कहलाए जाने वाले सपा नेता आजम खां के सितारे इस वक्त गर्दिश में चल रहे हैं। सरकार से बाहर होने के बाद एक के बाद एक 100 से ज्यादा मुकदमे दर्ज हो गए। अब तक उन्हें सात मामलों में सजा भी सुनाई जा चुकी है। हाल ही में दो पैन कार्ड मामले में आजम खां को बेटे अब्दुल्ला आजम खां के साथ सात साल की सजा सुनाई गई थी।

सजा के बाद उनको रामपुर की जेल में रखा गया है। जेल में जेल मेनुअल के अनुसार उनको रखा जा रहा है। जेल में ही उनकी पहचान के लिए नंबर भी दिया गया है।

सपा नेता आजम खां को 425 जबकि उनके बेटे अब्दुल्ला आजम को 426 नंबर दिया गया है। इसके अलावा उनको सजायाफ्ता कैदियों की दी जानी वाली यूनिफॉर्म भी दी जा चुकी है। जेल अधीक्षक राजेश यादव का कहना है कि जेल मैनुअल के अनुसार ही दोनों को रखा जा रहा है। जहां तक नंबर का सवाल है, सभी कैदियों के लिए रजिस्टर बना होता है। आने वाले कैदियों का नंबर जरूर लिखा जाता है। क्रम संख्या 425 पर सपा नेता आजम खां का नाम है, जबकि 426 पर अब्दुल्ला आजम का नाम है।

पुजारी का था शादीशुदा साली से अफेयर... महिला के पति ने दो रिश्तेदारों संग मार डाला

बरेली,संवाददाता। उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले में हुई साईं मंदिर के पुजारी की हत्या में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। सगे भाई के दो रिश्तेदारों और साढू ने मिलकर पुजारी का कत्ल किया था। आरोपी वारदात को लूट जैसा दिखाने के लिए मुकुट, मोबाइल और डीवीआर भी ले गए। बदायूं में साईं मंदिर के पुजारी की हत्या किसी और ने नहीं, बल्कि उसके भाई के दो रिश्तेदारों और साढू ने मिलकर की थी। घटना के पीछे भाई की साली से अवैध संबंध सामने आए हैं।

पुलिस टीम ने 48 घंटों में घटना का खुलासा करते हुए एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह के सामने आरोपियों को पेश किया। जहां पुलिस लाइन सभागार में रात आठ बजे खुलासा किया गया। पुलिस ने आरोंपियों के पास से मंदिर से लूटे गए दो चांदी के मुकुट व डीवीआर व बाइक भी बरामद की है।

थाना सिविल लाइंस क्षेत्र के खेड़ा बुजुर्ग स्थित सर्वेश्वर साईं मंदिर में 16 नवंबर की रात पुजारी मनोज शंखधार की गमछे से गला घोटकर हत्या कर दी गई थी। मंदिर से दो चांदी के मुकुट व सीसी कैमरे की डीवीआर हत्यारे अपने साथ ले गए थे। एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने घटना के खुलासे में एसओजी, सर्विलांस और थाना सिविल लाइंस समेत की चार टीमों का गठन किया था।

एसएसपी ने बताया कि आरोपियों से पूछताछ में सामने आया कि विशेष और नीतेश की बहन की शादी मृतक के बड़े भाई प्रदीप शर्मा से हुई थी। बहन की मौत हो जाने के बाद पुजारी मनोज का उनकी दूसरी अविवाहित बहन से प्रेम संबंध हो गया था, लेकिन परिवार ने उसकी शादी उसावां थाना क्षेत्र के गांव मंला नगला निवासी हिमांशु के साथ 2019 में कर दी। शादी के बाद भी मनोज का संपर्क साली से बना रहा, जिसके चलते हिमांशु और उसकी पत्नी के बीच विवाद गहराने लगा।

पत्नी ने पति के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज करा दिया पर मनोज से संबंध बनाए रखे।

परिजनों और रिश्तेदारों ने मामले में समझौता कराया तो हिमांशु अपनी पत्नी के साथ रहने लगा। इस बीच उसके दो बेटियां भी हुईं। इसके बाद भी पुजारी मनोज व साली का प्रेम संबंध खत्म नहीं हुआ। हिमांशु के पांच साले हैं। छोटे साले उसका पक्ष कर रहे थे, जबकि बड़े साले इस मामले से दूरी बनाए हुए थे। उसने अपने साले विशेष व नीतेश से मनोज की हत्या की योजना बनाई।

योजना के तहत 16 नवंबर की शाम नीतेश मंदिर में मनोज के पास पहुंच गया। दोनों ने साथ–साथ खाना खाया और साथ ही सो गया।

रात करीब 1:45 बजे विशेष और हिमांशु बाइक से मंदिर पहुंचे। नीतेश ने गेट खोला और तीनों ने मिलकर गमछे से गला घोटकर हत्या कर दी। वारदात को लूट जैसा दिखाने के लिए मुकुट, मोबाइल और डीवीआर भी ले गए।

यह हैं तीनों आरोपी

शाहजहांपुर के परौर के रहने वाले विशेष कुमार उर्फ छोटू, नीतेश कुमार सगे भाई हैं। दोनों ही मृतक पुजारी मनोज के भाई प्रदीप के सगे साले हैं। उसावां थाना क्षेत्र के गांव मंश नगला के रहने वाले हिमांशु प्रदीप का साढू है। इन्हीं की पत्नी से मृतक मनोज के अवैध संबंध थे।

तीनों पर एसएसपी ने किया था 25–25 हजार का इनाम घोषित

आरोपियों पर एसएसपी ने 25द्25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। पुलिस ने तीनों को 19 नवंबर को नई जेल की चिन्हित भूमि (बिल्सी रोड) के पास से गिरफ्तार किया।

हत्या करने के बाद मंशा नगला पहुंचे तीनों

पुजारी की हत्या करने के बाद तीनों आरोपी हिमांशु के घर मंश नगला पहुंचे। वहां पहने हुए कपड़ों को जला दिया और दूसरे कपड़े पहन लिए। डीवीआर को भी आग के हवाले कर दिया।

परिवार के लोगों को थी जानकारी, पुलिस को नहीं बताया राज

परिवार के लोगों को घटना की पूरी जानकारी थी, लेकिन पुलिस को कोई जानकरी परिवार के लोगों ने नहीं दी। इसके बाद भी पुलिस ने 48 घंटे में हत्यारोपियों को गिरफ्तार कर लिया। इसमें सबसे अधिक सीसी कैमरों की मदद मिली है।

सपा विधायक सुधाकर सिंह का निधन

लखनऊ,संवाददाता। मऊ की घोसी विधानसभा से सपा विधायक सुधाकर सिंह का निधन हो गया है। वे 67 साल के थे। परिवार के मुताबिक, सुधाकर सिंह 17 नवंबर को दिल्ली में उमर अंसारी के मैरिज रिसेप्शन में शामिल हुए थे। 18 नवंबर यानी मंगलवार रात सुधाकर सिंह दिल्ली से लौटे थे। उसी रात उनकी तबीयत ज्यादा बिगड़ गई। उन्हें तुरंत लखनऊ के मेदांता में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों की टीम लगातार उनकी सेहत की निगरानी कर रही थी। गुरुवार सुबह इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। उनके बेटे और पूर्व ब्लॉक प्रमुख डॉ. सुजीत सिंह ने पिता के निधन की पुष्टि की। परिवार और सपा कार्यकर्ता सुधाकर सिंह का शव लेकर घोसी में उनके पैतृक गांव पहुंच चुके हैं। गांव में समर्थकों और करीबियों का खासी भीड़ जमा हो गई है। अंतिम दर्शन के लिए शव सपा कार्यालय घोसी में रखा जाएगा। आज ही अंतिम संस्कार होगा। सुधाकर सिंह तीन बार विधायक रहे। उपचुनाव में मंत्री दारा सिंह चौहान को हराकर विधायक बने थे। शिवपाल यादव के बेहद करीबी माने जाते थे। अखिलेश यादव ने अस्पताल पहुंचकर सुधाकर के परिवार से मुलाकात की। वहीं, सीएम योगी ने भी 'र' पर लिखा– मेरी संवेदनाएं परिजनों के साथ हैं। भगवान से प्रार्थना है कि परिवार को यह दुःख सहन करने की ताकत मिले।

घोसी में होगा अंतिम संस्कार

सुधाकर सिंह के परिवार में पत्नी और बेटा डॉ. सुजीत सिंह हैं।

अंतिम संस्कार की तैयारी घोसी स्थित उनके पैतृक गांव में की जा रही है, जहां बड़ी संख्या में नेता और समर्थक पहुंचने लगे हैं। सपा ने सुधाकर सिंह के निधन पर दुख जताया। र पर लिखा– ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें। परिजनों को यह दुख सहने की शक्ति मिले। भावभीनी श्रद्धांजलि!

17 साल की उम्र में जेपी आंदोलन में शामिल हुए

सुधाकर सिंह का जन्म 11 नवंबर 1958 घोसी ब्लॉक क्षेत्र के भावनपुर गांव में हुआ था। वह छात्र राजनीति में सक्रिय थे। आपातकाल के दौरान 17 वर्ष की आयु में जयप्रकाश नारायण की समग्र क्रांति आंदोलन में शामिल हुए और जेल गए।

1977–78 और 78–79 में सर्वोदय डिग्री कॉलेज घोसी में अध्यक्ष रहे। पहली बार 1996 में नत्थूपुर से समाजवादी पार्टी से विधायक बने। फिर 2012 से विधायक बने।

2017 में हुए चुनाव में बीजेपी प्रत्याशी फागू चौहान से हार गए। 2019 में घोसी विधायक फागू चौहान के बिहार प्रदेश का राज्यपाल बनने के बाद हुए उपचुनाव में 2000 वोटों से हार गए।

2022 विधानसभा चुनाव में सपा ने घोसी से सुधाकर सिंह को टिकट दिया था, लेकिन अंतिम समय में पार्टी ने उनका टिकट काटकर भाजपा छोड़कर आए दारा सिंह चौहान को दे दिया। इसके बाद सुधाकर सिंह ने निर्दलीय चुनाव लड़ा, हालांकि उन्हें दारा सिंह ने हरा दिया।

10वीं बार बने नीतीश मुख्यमंत्री

1. शपथ- 3 मार्च 2000 — कार्यकाल 10 मार्च 2000 तक
2. शपथ- 24 नवंबर 2005 — कार्यकाल 25 नवबंर 2010 तक
3. शपथ- 26 नवंबर 2010 — कार्यकाल-19 मई 2014
4. शपथ- 22 फरवरी 2015 — कार्यकाल- 19-नवंबर-2015
5. शपथ- 20 नवंबर 2015 — कार्यकाल-26-जुलाई-2017
6. शपथ-27 जुलाई 2017 — कार्यकाल-12-नवंबर-2020
7. शपथ-16 नवंबर 2020 — कार्यकाल-9-अगस्त-2022
8. शपथ- 10 अगस्त 2022 — कार्यकाल-28-जनवरी-2024
9. शपथ- 28 जनवरी 2024 — कार्यकाल-19-नवंबर-2025
10. शपथ- 20 नवंबर 2025

पीएम मोदी ने नीतीश कुमार को दी बधाई

पांच-पांच नेताओं को एक साथ दिलाई गई शपथ

पटना,एजेंसी

बिहार विधानसभा चुनाव में 202 सीटें लाने वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के लिए आज ऐतिहासिक दिन है। गांधी मैदान में नीतीश कुमार ने 10वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा फिर से डिप्टी सीएम बनाए गए। मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और कई केंद्रीय मंत्रियों समेत एनडीए के सभी घटकों के प्रमुखों, एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और बड़े नेता मौजूद रहे। पीएम नरेंद्र मोदी ने गमछा लहरा कर लोगों का अभिनंदन किया। इससे पहले पांच-पांच नेताओं को एक साथ शपथ दिलाया गया। अंत में श्रेयसी सिंह समेत छह नेताओं ने एक साथ मंत्री पद की शपथ ली। एनडीए सरकार में सीएम नीतीश कुमार के अलावा 26 मंत्री बनाए गए। शपथ लेने वालों में सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा, बिजेन्द्र प्रसाद यादव, श्रवण कुमार, मंगल पांडेय, डॉ. दिलीप जायसवाल, अशोक चौधरी, लेशी सिंह, मदन सहनी, नितिन नवीन, राम कृपाल यादव, संतोष कुमार सुमन, सुनील कुमार, जमां खान, संजय सिंह 'टाइगर', अरुण शंकर प्रसाद, सुरेद्र मेहता, नारायण प्रसाद, सुमित निषाद, लखेंद्र कुमार रोशन, शैलेश कुमार सिंह, डॉ. प्रमोद कुमार, संजय कुमार, संजय कुमार सिंह और दीपक प्रकाश शामिल हैं।

राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने श्रेयसी सिंह, लखेंद्र रोशन, दीपक प्रकाश, संजय कुमार, संजय कुमार सिंह, डॉ प्रमोद कुमार को मंत्री मद की शपथ दिलाई।

राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने लेशी सिंह, मदन सहनी, नितिन नवीन, रामकृपाल यादव, संतोष सुमन और सुनील कुमार को एक साथ मंत्री पद की शपथ दिलाई।

विजय सिन्हा के शपथ लेने के बाद राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने विजय चौधरी, विजेंद्र यादव, श्रवण कुमार, मंगल पांडेय और दिलीप जायसवाल को एक साथ मंत्री पद की शपथ दिलाई।

नीतीश कुमार ने मुख्यमंत्री के रूप में 10वीं बार शपथ ग्रहण कर लिया है। राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। उनके बाद सम्राट चौधरी ने मंत्री पद की शपथ ली। वह दूसरी बार बिहार के डिप्टी सीएम बने हैं।

राज्यपाल के आदेश पर सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा, विजय चौधरी, विजेंद्र प्रसाद यादव, श्रवण कुमार, मंगल पांडेय, डॉ दिलीप जायसवाल, अशोक चौधरी, लेशी सिंह, मदन सहनी, नितिन नवीन, रामकृपाल यादव, संतोष सुमन, सुनील कुमार, जमा खान, संजय सिंह टाइगर, अरुण शंकर प्रसाद, सुरेंद्र मेहता, नारायण प्रसाद, रमा निषाद, लखेंद्र कुमार रोशन, श्रेयसी सिंह, प्रमोद कुमार, संजय कुमार सिंह, दीपक प्रकाश को मंत्री बनाया गया।

मंच पर पहुंचे लोक जनशक्ति पार्टी राम विलास के प्रमुख चिराग पासवान ने एनडीए के सभी वरिष्ठ नेताओं से आशीर्वाद लिया। वह अपनी पार्टी से तीन मंत्री चाहते थे। लेकिन, आज उनकी पार्टी से एक मंत्री शपथ लेंगे। बाकी बाद में लेगें।

गांधी मैदान की सुरक्षा एसपीजी के हाथों में है। पूरे गांधी मैदान में त्रि स्तरीय सुरक्षा घेरा बनाया गया है। चप्पे-चप्पे पर सुरक्षाकमी तैनात हैं। जिला पुलिस बल भी गांधी मैदान के अंदर और बाहर पर्याप्त संख्या में तैनात है ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पटना पहुंच चुके हैं। कुछ ही देर में वह गांधी मैदान पहुंचेंगे। भाजपा के वरिष्ठ नेता उनके स्वागत के लिए एयरपोर्ट पहुंचे हैं।

अपनी उम्र से बड़ी भूमिका निभा रही हुमा की

श्वेता बसु प्रसाद ने की तारीफ

मुम्बई,एजेंसी। पॉलिटिकल ड्रामा सीरीज महारानी के चौथे सीजन में काम करने के अनुभव को लेकर श्वेता बसु प्रसाद ने अमर उजाला से बातचीत की है। श्वेता ने क्या कुछ कहा, चलिए जानते हैं। पॉलिटिकल ड्रामा 'महारानी' के चौथे सीजन में कहानी एक नई डायरेक्शन में बढ़ने वाली है। इस बार सीरीज में जेनरेशन लीप लिया गया है। ऑडियंस को दिखेगी रानी भारती (हुमा कुरैशी) की बेटी रौशनी भारती, जिसकी भूमिका निभा रही हैं अभिनेत्री श्वेता बसु प्रसाद। एक्ट्रेस ने हाल ही में अमर उजाला से बातचीत की और सीरीज को लेकर बात की।

'जब सुभाष कपूर जी ने कहा कि लीप के बाद तुम्हीं रौशनी बनोगी, तो मैं भावुक हो गई'

बातचीत के दौरान, श्वेता कहती हैं, 'मैं महारानी के तीनों सीजन की बहुत बड़ी प्रशंसक रही हूं। जब इस शो के क्रिएटर और राइटर सुभाष कपूर जी से मुलाकात हुई और उन्होंने सीजन 4 के लिए मेरा नाम सुझाया, तो यह मेरे लिए बेहद खुशी की बात थी। उन्होंने बताया कि जब उन्होंने सीजन 1 में रौशनी भारती का किरदार लिखा था, तब ही मन बना लिया था कि लीप के बाद मुझे कास्ट करेंगे। किसी क्रिएटर का इस तरह का विश्वास एक कलाकार के लिए बहुत बड़ी बात होती है। इस फ्रेंचाइजी की लोकप्रियता, मजबूत लेखन और शानदार परफॉर्मेंस – इन सबने मुझे बहुत आकर्षित किया।

'स्पॉयलर तो नहीं दूंगी, लेकिन....'

अपने किरदार रौशनी भारती के बारे में श्वेता कहती हैं, 'स्पॉयलर तो नहीं दूंगी (हंसती हैं), लेकिन इतना जरूर कहूंगी कि रौशनी, रानी भारती की बेटी है – एक पॉलिटिकल परिवार में पली–बढ़ी, बेहद दमदार और अपने माता–पिता की विरासत को लेकर चलने वाली। इस बार वो पहले से ज्यादा मजबूत, आत्मविश्वासी और प्रभावशाली नजर आएगी।'

'हुमा मेरे लिए हमेशा साकिब की बड़ी दीदी जैसी रही हैं'

हुमा कुरैशी के साथ काम को लेकर श्वेता बसु प्रसाद का अनुभव बेहद खास रहा। वह कहती हैं, 'हुमा बेहतरीन कलाकार हैं और बहुत ही शानदार इंसान भी। मैंने उनके भाई साकिब सलीम के साथ कॉमेडी कपल नाम की फिल्म की थी, तो हुमा मेरे लिए हमेशा साकिब की बड़ी दीदी जैसी रही हैं। हमारी दो–चार बार सोशल मीटिंग्स हुई थीं, लेकिन यह पहली बार था जब हमने साथ काम किया। क्योंकि यह महारानी का चौथा सीजन है, तो यह उनका सेट और उनका शो है। लेकिन उन्होंने कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि मैं पहली बार इस शो का हिस्सा बनी हूँ। उन्होंने बहुत वेलकमिंग और पॉजिटिव माहौल बनाया।'

'हुमा ने अपनी उम्र से बड़ी भूमिका ग्रेस के साथ निभाई'

वह आगे जोड़ती हैं, 'शूटिंग के दौरान हुमा और मेरी जो दोस्ती हुई, वो स्क्रीन पर भी साफ झलकेगी। हुमा बहुत इंस्पायरिंग हैं। उन्होंने जिस कॉन्फिडेंस और ग्रेस के साथ अपनी उम्र से बड़ी भूमिका निभाई है, वो हमारे जैसे कलाकारों और खासकर महिला अभिनेत्रियों के लिए बहुत प्रेरणादायक है। उन्होंने दिखाया कि उम्र नहीं, किरदार मायने रखता है। अगर किरदार अच्छा है, तो उसे निभाने के लिए बस ईमानदारी और हिम्मत चाहिए।'

'आउटसाइडर हूं, लेकिन इस इंडस्ट्री ने हमेशा मुझे काम, इज्जत और प्यार दिया'

अपनी स्क्रिप्ट चॉइस को लेकर श्वेता हमेशा ईमानदार रही हैं। वह स्वीकार करती हैं, 'अगर दिल नहीं मानता, तो मैं प्रोजेक्ट नहीं करती। जैसा मैंने कहा, मैं पहले ऑडियंस हूं, फिर एक्टर। अगर मुझे लगे कि मैं खुद वो फिल्म नहीं देखना चाहूंगी, तो ऑडियंस का वक्त क्यों बर्बाद करूं? मेरी जिम्मेदारी है कि वही प्रोजेक्ट चुनूं जो ऑडियंस को पसंद आए। हिट–फ्लॉप तो किस्मत की बात है, पर इरादा हमेशा ईमानदार होना चाहिए।' वह आगे जोड़ती हैं, 'मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानती हूं। मैं एक 'आउटसाइडर' रही हूं, लेकिन इस इंडस्ट्री ने हमेशा मुझे काम, इज्जत और प्यार दिया। मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि मुझे मेरी मेहनत का फल नहीं मिला। यहां धैर्य और अनुशासन बहुत जरूरी हैं और अब मुझे लगता है कि मेहनत का असर दिख रहा है।'

'मैंने 'रिटेक' लिखी और डायरेक्ट की ... अनुपम खेर के साथ काम करना अद्भुत अनुभव था'

अब श्वेता केवल कैमरे के सामने ही नहीं, बल्कि कैमरे के पीछे भी अपना टैलेंट दिखा रही हैं। वह बताती हैं, 'मैंने 'रिटेक' नाम की एक शॉर्ट फिल्म लिखी और डायरेक्ट की है, जिसमें अनुपम खेर साहब हैं और अप्पलॉज एंटरटेनमेंट ने इसे प्रोड्यूस किया है। मैं फिलहाल नई स्क्रिप्ट्स पर काम कर रही हूं – शॉर्ट फिल्म ही नहीं, बल्कि फीचर फिल्म पर भी। आगे डायरेक्शन जरूर करूंगी, लेकिन एक्टिंग मेरा पहला प्यार है और रहेगा। कैमरे के आगे रहना मेरी पहचान है, वो कभी नहीं छोड़ूंगी।'

दीपिका पादुकोण को अपने फैसलों पर होता है पछतावा! अब फिल्म चुनते वक्त इन बातों का रखती हैं ध्यान

एंटरटेनमेंट डेस्क। दीपिका पादुकोण ने हाल ही में बताया है कि वह फिल्मों को किस तरह से चुनती हैं। वह शाहरुख खान की अपकमिंग फिल्म 'किंग' में एक सहायक भूमिका में होंगी। दीपिका पादुकोण बॉलीवुड की सबसे कामयाब अभिनेत्रियों में शामिल हैं। अपने 18 साल के करियर में दीपिका पादुकोण ने अब तक कई कामयाब फिल्मों में काम किया है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत फिल्म 'ओम शांति ओम' से की और वह पैन इंडिया ब्लॉकबस्टर फिल्म 'कल्कि 2898 ए.डी.' में नजर आईं। हालांकि, उनकी कुछ फिल्में ऐसी भी रहीं, जो बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकीं। हाल ही में दीपिका ने एक इंटरव्यू में माना कि कई बार उन्होंने गलत फैसले भी लिए हैं, जिसका उन्हें पछतावा है।

दीपिका के लिए पैसा सबकुछ नहीं

हार्पर्स बाजार इंडिया के साथ बातचीत में दीपिका ने बताया कि वह फिल्म चुनते वक्त किन बातों का ध्यान देती हैं। दीपिका ने बताया 'सबसे बड़ी चीज प्रमाणिकता है। जो भी चीज सच्ची नहीं लगती, वह मुझे रास नहीं आती। कभी–कभी लोग बहुत सारा पैसा देते हैं और सोचते हैं कि इससे सब कुछ हो जाएगा लेकिन वह काफी नहीं होता। मुझे लोगों या संदेश पर यकीन है और मैं उस पर कायम रहूंगी।'

फैसलों पर विचार करती हैं दीपिका

दीपिका ने माना कि वह अपने विचार को लेकर इतनी स्पष्ट नहीं थीं। उन्होंने कहा 'क्या मैं हमेशा से चीजों को लेकर इतनी स्पष्ट थी? शायद नहीं। हालांकि अब मैं उस स्पष्टता तक पहुंच गई हूं। क्या मैं कभी–कभी पीछे मुड़कर सोचती हूं कि मैं क्या सोच रही थी? जी हां मैं सोचती हूं। इससे मैं सीखती हूं। शायद आज से 10 साल बाद, मैं आज के कुछ फैसलों पर सवाल उठाऊंगी जो फैसले अभी मुझे सही लगते हैं।'

बतौर निर्देशक नए जानर में हाथ आजमाने को तैयार कोंकणा सेन शर्मा

एंटरटेनमेंट डेस्क। कोंकणा सेन शर्मा जो कि एक्ट्रेस के साथ डायरेक्टर भी हैं, ने अपने डायरेक्टोरियल प्रोजेक्ट के बारे में अपडेट दी है। कोंकणा सेन शर्मा ने न सिर्फ एक अभिनेत्री बल्कि एक डायरेक्टर के तौर पर भी अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने साल 2016 में आई फिल्म 'डेथ इन द गंज' का निर्देशन किया।

वह 'लस्ट स्टोरीज 2' की सह–निर्देशक रहीं। अब एक्ट्रेस–डायरेक्टर ने अपने अगले डायरेक्टोरियल प्रोजेक्ट के बारे में अपडेट दी है।

कॉमेडी फिल्म का निर्देशन करने वाली हैं अभिनेत्री

अपने अगले प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी देते हुए कोंकणा सेन शर्मा ने एचटी से बताया 'यह एक कॉमेडी शो है, जिसे मैं अपने कॉलेज के दोस्त जयदीप सरकार के साथ लिख रही हूं और इसका निर्देशन कर रही हूं। मैं इसे लेकर थोड़ी घबराई हुई हूं लेकिन इसके साथ हमें मजा आने वाला है।'

शो में अभिनय नहीं करेंगी कोंकणा

कई कलाकार अपने निर्देशन में बन रहे शो में काम करते हैं। ऐसे में कोंकणा सेन शर्मा से पूछा गया कि क्या वह अपने निर्देशन में बन रहे शो में काम करेंगी? इस पर उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि मैं इसमें बतौर अभिनेत्री काम करूंगी। मेरे पास कई दूसरे अच्छे कलाकार हैं, इसलिए मैं चीजों को अपने लिए मुश्किल क्यों बनाऊं। मैंने देखा है कि कलाकार प्रोजेक्ट को खुद लिखते हैं और उसका निर्देशन करते हैं। हालांकि मेरे पास अभी वो काबिलियत नहीं है।'

कोंकणा सेन शर्मा का काम

कोंकणा सेन शर्मा ने 'फिल्म पेज 3' से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। हाल ही में वह साल 2007 में रिलीज हुई फिल्म 'लाइफ इन ए मेट्रो' के सीक्वल 'मेट्रो३ इन दिनो' में नजर आईं। इसमें पंकज त्रिपाठी, सारा अली खान, अली फजल, फातिमा सना शेख, अनुपम खेर और नीना गुप्ता जैसे कलाकार थे। इसका निर्देशन अनुराग बसु ने किया।

तारा सुतारिया ने किया किस

बर्थ डे वाले दिन वीर ने पोस्ट भी की थी साझा

वीर पहाड़िया ने तारा सुतारिया के जन्मदिन के मौके पर अपनी और उनकी कई तस्वीरें इंस्टाग्राम पर भी शेयर की थीं। इनमें हालिया छुट्टियों और इवेंट की कई तस्वीरें शामिल हैं। अपनी पोस्ट में वीर ने लिखा था, 'तुम मेरे लिए सबकुछ हो।' इस पोस्ट वीर के दोस्तों और कई बॉलीवुड सेलेब्स ने लाइक किया। पिछले दिनों भी एक शादी में तारा और वीर साथ में डांस करते नजर आए थे। दोनों ने कई मौकों पर साथ नजर आते हैं।

वीर और तारा सुतारिया का वर्क फ्रंट

वर्कफ्रंट की बात करें तो वीर पहाड़िया ने इसी साल की शुरुआत में आई फिल्म 'स्काई फोर्स' से बॉलीवुड में डेब्यू किया। इस फिल्म में वो अक्षय कुमार और सारा अली खान के साथ लीड रोल में नजर आए थे। वहीं तारा सुतारिया आखिरी बार साल 2023 में आई 'अपूर्वा' में नजर आई थीं। अगले साल वह साउथ की फिल्म 'टॉक्सिक' में एक्टर यश के साथ नजर आएंगी।

एंटरटेनमेंट डेस्क। तारा सुतारिया ने बुधवार को दोस्त संग अपना जन्मदिन मनाया। इस बर्थ डे सेलिब्रेशन में उनके रूमर्ड बॉयफ्रेंड वीर पहाड़िया भी शामिल हुए। इसी मौके पर सरेआम एक्ट्रेस ने अपने रूमर्ड बॉयफ्रेंड को किस किया। तारा सुतारिया ने दोस्तों और रूमर्ड बॉयफ्रेंड वीर पहाड़िया के साथ अपना 30वां जन्मदिन मनाया। एक्ट्रेस के बर्थ डे सेलिब्रेशन की तस्वीरें उनके दोस्त ओरी ने अपने इंस्टाग्राम पेज के स्टोरी सेक्शन में पोस्ट की हैं। साथ ही एक वीडियो भी पोस्ट किया है, इसमें तारा और वीर ने साथ मिलकर बर्थ डे का केक काटा।

ओरी की इंस्टाग्राम स्टोरी पर जो वीडियो पोस्ट किया गया है, उसमें तारा ने पहले वीर पहाड़िया के साथ अपने बर्थ डे का केक काटा। इसके बाद वीर ने तारा को केक खिलाया। आखिर में तारा ने वीर को गालों पर दो बार किस किया। इस खूबसूरत पल को उनके दोस्तों ने रिकॉर्ड किया। सभी दोनों को चीयर कर रहे थे।

149 साल के टेस्ट इतिहास में पहली बार

किसी मैच की शुरुआती तीन पारियों में शून्य पर गिरा पहला विकेट

स्पोर्ट्स डेस्क। इंग्लैंड की पहली पारी 32.5 ओवर में 172 रन पर सिमट गई थी। जबकि ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 45.2 ओवर में 132 रन पर सिमट गई। दोनों पारियों को मिलाकर कुल 78.1 ओवर में दो पारियां सिमट गईं। यह एशेज टेस्ट में दोनों टीमों को मिलाकर दूसरी सबसे छोटी पहली पारी है। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच पर्थ में एशेज सीरीज का पहला मुकाबला खेला जा रहा है। इस टेस्ट का शनिवार को दूसरा दिन है और तीसरी पारी जारी है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी में 172 रन बनाए।

जवाब में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 132 रन पर सिमट गई। अब इंग्लैंड की दूसरी पारी जारी है। इस टेस्ट में वैसे तो पहले दिन ही कई रिकॉर्ड बने, लेकिन दूसरे दिन एक ऐसा रिकॉर्ड बना, जिसकी शायद ही किसी ने कल्पना की होगी।

149 साल के टेस्ट इतिहास में पहली बार किसी एक टेस्ट की शुरुआती तीन पारियों में शून्य पर यानी बिना किसी स्कोर के पहला विकेट गिरा। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया, दोनों की पहली पारी में शून्य पर पहला विकेट गिरा था। अब इंग्लैंड की दूसरी पारी में भी बिना किसी स्कोर के पहला विकेट गिरा। टेस्ट क्रिकेट की शुरुआत मार्च 1877 में हुई थी और इसके 148 साल और आठ महीने में पहली बार ऐसा हुआ है।

टेस्ट में पहली बार हुआ ऐसा!

पर्थ टेस्ट में इंग्लैंड को पहली पारी में पहला झटका जैक क्राउली के रूप में लगा था। वह खाता नहीं खोल सके थे। तब इंग्लैंड का स्कोर जीरो था। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी में जेक वेदराल्ड भी खाता खोले बिना आउट हुए थे। तब ऑस्ट्रेलिया का स्कोर शून्य था। इसके बाद दूसरे दिन इंग्लैंड की दूसरी पारी में जैक क्राउली फिर बिना खाता खोले आउट हुए और तब इंग्लैंड का स्कोर शून्य था। टेस्ट में ऐसा पहली बार हुआ है। क्राउली किसी एक एशेज टेस्ट की दोनों पारियों में खाता खोले बिना आउट होने वाले चौथे इंग्लिश बल्लेबाज हैं। उनसे पहले ट्रेवर बेलिस, डेनिस एमिस और माइकल एथर्टन ऐसा कारनामा कर चुके हैं।

सबसे छोटी पहली पारी (कुल ओवर के मामले में)

वहीं, इंग्लैंड की पहली पारी 32.5 ओवर में 172 रन पर सिमट गई थी। जबकि ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 45.2 ओवर में 132 रन पर सिमट गई। दोनों पारियों को मिलाकर कुल 78.1 ओवर में दो पारियां सिमट गईं। यह एशेज टेस्ट में दोनों टीमों को मिलाकर दूसरी सबसे छोटी पहली पारी है। 1902 में मेलबर्न में खेले गए एशेज टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 32.1 ओवर और इंग्लैंड की पहली पारी 15.4 ओवर में सिमट गई थी। यानी कुल मिलाकर दोनों पारियां में 47.5 ओवर का खेल हुआ था। इस लिस्ट में यह पहले नंबर पर है।

स्टोक्स ने 89 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा

एशेज इतिहास में इंग्लैंड के कप्तानों ने ऑस्ट्रेलियाई सरजमीं पर कुछ यादगार गेंदबाजी प्रदर्शन किए हैं। इस सूची में ताजा और सबसे ऊपर नाम बेन स्टोक्स का है, जिन्होंने पर्थ टेस्ट के दौरान ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी में पांच विकेट लिए और कंगारुओं को जल्दी समेटने में अहम भूमिका निभाई। उनके 5/23 के आंकड़े उन्हें लगभग एक सदी पुराने रिकॉर्ड्स से आगे ले जाते हैं। ऐतिहासिक रूप से, इस सूची में गबी एलन (1936), जॉनी डगलस (1912), फ्रेडी ब्राउन (1951) और बॉब विलिस (1982) जैसे दिग्गज कप्तान भी शामिल हैं।

दोनों टीमों का पहली पारी में 200 से कम पर आउट होना

एशेज में पहली पारी में दोनों टीमों का 200 रन से कम पर आउट होना बेहद दुर्लभ माना जाता है। यह आखिरी बार 1990/91 के ब्रिस्बेन (गाबा) टेस्ट में हुआ था, जब इंग्लैंड 194 रन पर आउट हुआ और ऑस्ट्रेलिया 152 रन पर ढेर हो गया।

यह स्थिति बताती है कि पर्थ में बल्लेबाजों को अब तक संघर्ष करना पड़ा है और गेंदबाजों ने मैच पर पूरी तरह पकड़ बनाई। ऐसे मुकाबले अक्सर कम स्कोर होने के बावजूद रोमांचक साबित होते हैं, क्योंकि हर रन की अहमियत बढ़ जाती है।

ऑस्ट्रेलिया का 21वीं सदी में दूसरा सबसे कम स्कोर

132 का स्कोर ऑस्ट्रेलिया की घरेलू एशेज टेस्ट इतिहास में 21वीं सदी का दूसरा सबसे कम पहली पारी का स्कोर है। इससे भी कम स्कोर 2010/11 के बॉक्सिंग डे टेस्ट (मेलबर्न) में दर्ज हुआ था, जब ऑस्ट्रेलिया सिर्फ 98 रन पर ऑल–आउट हो गया था।

चेन्नई सुपर किंग्स में शामिल होकर संजू सैमसन खुश

स्पोर्ट्स डेस्क। आईपीएल 2026 से पहले सीएसके ने अपने यूट्यूब चैनल पर सैमसन का एक इंटरव्यू साझा किया, जिसमें उन्होंने धोनी के प्रति अपनी प्रशंसा और पहली मुलाकात का अनुभव याद किया। भारतीय टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने खुलासा किया है कि वह बचपन से ही महेंद्र सिंह धोनी के करीब रहने और उनसे सीखने की इच्छा रखते थे। अब किस्मत ने उन्हें वह मौका दे दिया है, क्योंकि आईपीएल 2026 में वह चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) की ओर से खेलते हुए धोनी के साथ एक ही ड्रेसिंग रूम साझा करेंगे। सैमसन का राजस्थान रॉयल्स (आरआर) से 18 करोड़ रुपये के ट्रेड में सीएसके ने अपनी टीम में शामिल किया है।

सैमसन ने साझा किया धोनी के साथ पहला अनुभव

आईपीएल 2026 से पहले सीएसके ने अपने यूट्यूब चैनल पर सैमसन का एक इंटरव्यू साझा किया, जिसमें उन्होंने धोनी के प्रति अपनी प्रशंसा और पहली मुलाकात का अनुभव याद किया। उन्होंने बताया कि जब वह 19 साल के थे और पहली बार टीम इंडिया में चयन हुआ था, तब यूके दौरे पर उनकी मुलाकात धोनी से हुई थी। सैमसन ने कहा, 'सबको पता है कि मैदान पर एक शख्स होता है, एमएस धोनी। मैं उनसे पहली बार 19 साल की उम्र में यूके टूर पर मिला था। तब 10–20 दिन उनके साथ बिताए। उसके बाद आईपीएल में उन्हें सिर्फ दूर से देख पाता था, क्योंकि उनके आसपास हमेशा भीड़ रहती है। मैं सोचता था कि उनसे ठीक से मिलने के लिए अलग से वक्त चाहिए।'

सैमसन ने कहा कि अब धोनी के साथ सीएसके का ड्रेसिंग रूम साझा करना उनके लिए किसी सपने के सच होने जैसा है। उन्होंने कहा, 'मेरी हमेशा यह इच्छा थी। अब किस्मत मुझे उनके साथ एक ही ड्रेसिंग रूम में ले आई है। आने वाले दो महीने उनके साथ समय बिताने का, नाश्ता करने का, प्रैक्टिस करने और खेलने का मौका मिलेगा, यह सोचकर ही मैं बहुत खुश हूं।'

सीएसके की योजना का अहम हिस्सा माने जा रहे सैमसन

सीएसके की जर्सी पहनने के बाद सैमसन ने कहा था कि उन्हें 'एक चैंपियन जैसा महसूस' हो रहा है। 177 आईपीएल मैचों में 4704 रन, तीन शतक और 26 अर्धशतक के साथ वह अनुभव और नेतृत्व, दोनों लेकर आ रहे हैं। वह कई वर्षों तक राजस्थान रॉयल्स के कप्तान भी रहे हैं। सैमसन को शामिल करने के लिए सीएसके ने एक बड़ा ट्रेड किया, जिसके तहत रवींद्र जडेजा और सैम करन राजस्थान रॉयल्स से जुड़ गए।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित।
पिनः– 273003

UPHIN/2023/90814

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

स्पोर्ट्स डेस्क। कप्तान बदलने के बाद भी किस्मत भारतीय टीम के साथ नहीं रही। पंत ने टॉस के लिए सिक्का उछाला, दक्षिण अफ्रीका के कप्तान तेंबा बावुमा ने 'हेड्स' कहा और कॉल सही बैठा। इसी के साथ भारत ने पिछले नौ टेस्ट में से आठवीं बार टॉस गंवाया। गुवाहाटी में शनिवार को जब बारसापारा स्टेडियम ने अपने पहले टेस्ट मैच की मेजबानी की, तब भारतीय टीम नई उम्मीदों के साथ मैदान में उतरी। शुभमन गिल की चोट के चलते ऋषभ पंत ने कप्तानी संभाली और वह भारत के 38वें टेस्ट कप्तान बन गए। इसके साथ ही वह एमएस धोनी के बाद भारत के केवल दूसरे विकेटकीपर–कप्तान बने। धोनी ने 2008 से 2014 तक 60 टेस्ट में भारतीय टीम की कप्तानी की।

हालांकि, कप्तान बदलने के बाद भी किस्मत भारतीय टीम के साथ नहीं रही। पंत ने टॉस के लिए सिक्का उछाला, दक्षिण अफ्रीका के कप्तान तेंबा बावुमा ने 'हेड्स' कहा और कॉल सही बैठा। इसी के साथ भारत ने पिछले नौ टेस्ट में से आठवीं बार टॉस गंवाया।

टॉस की कहानी और पिच का हाल

दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतते ही बल्लेबाजी चुनी, क्योंकि गुवाहाटी की लाल मिट्टी वाली पिच पहले दो दिनों तक बल्लेबाजी के लिए मददगार मानी जा रही है। पिच बाद में स्पिनर्स को मदद दे सकती है, लेकिन शुरुआती सत्र बल्लेबाजी के लिए अनुकूल बताया जा रहा है। पंत ने टॉस हारने के बाद शांत प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'विकेट बल्लेबाजत के लिए अच्छा लग रहा है, लेकिन पहले गेंदबाजी करना भी बुरा विकल्प नहीं है।'

टॉस हार का लंबा सिलसिला

टॉस की बदकिस्मती नियमित कप्तान शुभमन गिल के समय से चली आ रही है। गिल इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट की सीरीज में एक भी टॉस नहीं जीत सके थे। हालांकि, भारत वह सीरीज 2द्2 से बराबर करने में कामयाब रहा था। गिल ने अक्तूबर में वेस्टइंडीज के खिलाफ दिल्ली टेस्ट में टॉस जरूर जीता था, लेकिन मौजूदा सीरीज के पहले टेस्ट में कोलकाता में फिर टॉस हार गए और भारत को उस मुश्किल पिच पर इसका खामियाजा भुगतना पड़ा, जहां चौथी पारी में भारत 124 रन तक नहीं पहुंच सका।

भारत फिलहाल इस सीरीज में 0–1 से पीछे है और इस मैच को जीतकर बराबरी करने की चुनौती सामने है। भले ही टॉस भारत के पक्ष में न रहा हो, लेकिन टीम और फैंस की उम्मीदें अभी भी पंत की कप्तानी और टीम के प्रदर्शन पर टिकी हैं।